प्रकाशक :
श्री सद्गुरू कबीर धर्मदास साहब वंशावली
प्रतिनिधि सभा, दामाखेड़ा
जिला–रायपुर (छत्तीसगढ़)

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण : सन् २००३

मूल्य :

कम्प्यूटर कम्पोजिंग
प्रकाश कुँज
कटोरा तालाब, रायपुर (छत्तीसगढ)

मुद्रक :

॥ सत्यनाम ॥

पूनो महात्तम

(वृहत्, लघु एवं बरसाइत)

सरल टीका सहित

संरक्षक :
पंथ श्री १०८ हुजूर प्रकाशमुनि नाम साहब
(आचार्य कबीर पंथ)

टीकाकार :
डॉ. पारसनाथ सिंह

प्रकाशक :
श्री सद्गुरू कबीर धर्मदास साहब वंशावली
प्रतिनिधि सभा दामाखेड़ा,
जिला रायपुर (छत्तीसगढ़)

पूनो व्रत कथा महात्तम

सत्यनाम, सतसुकृत, आदि, अदली,

अजर, अचिंत पुरूष, मुनिन्द्र करुणामय, कबीर,

सुरतियोग, संतायन, धनी धर्मदास, वचनवंश चूरामणि नाम,

सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोधगुरू बालापीर नाम,

केवलनाम, अमोलनाम, सुरति सनेही नाम,

हक्कनाम, पाकनाम, प्रकटनाम, धीरजनाम,

उग्रनाम, दयानाम, पंथ श्री गृन्धमुनि नाम साहब,

पंथ श्री हुजूर १०८ प्रकाशमुनि नाम साहब की दया

चार गुरू वंश ब्यालिस की दया

सर्व संत महन्तों की दया-

पूनो व्रत पुरुष को होई । अमरपुरी से आयो सोई ।

संसार के सभी धर्मों में पूर्णिमा किसी न किसी रूप में मनाई जाती है, लेकिन कबीर पंथ में पूर्णिमा का विशेष महत्व है। सद्गुरु कबीर साहब का प्राकट्य ज्येष्ठ पूर्णिमा के दिन हुआ था। इस दिन पूरे विश्व में कबीर जयन्ती मनाई जाती है। धनी धर्मदास जी साहब का जन्म कार्तिक पूर्णिमा के दिन हुआ था। प्रथम वंशाचार्य पूज्य मुक्तामणि नाम साहब का प्राकट्य भी अगहन पूर्णिमा के दिन हुआ था। पूर्णिमा के दिन अन्य कई महापुरुषों का भी जन्म हुआ था।

पूर्णिमा व्रत के अनुष्ठान का कारण :- पूर्णिमा के दिन सूरज चाँद समता भाव का प्रदर्शन करते हैं, अर्थात् पूर्णिमा के दिन सूर्य का प्रकाश तो दिन में रहता ही है, रात्रि में चन्द्रमा भी अपने पूर्ण स्वरुप में होता है, अपनी पूर्ण कला में होता है। अन्य तिथियों में चन्द्रमा घटता बढ़ता है। अमावस्या को तो प्रकाश होता ही नहीं है। जैसे पूर्णिमा में पूर्ण चन्द्रमा पूर्ण होता है, वैसे ही हम भी पूर्ण हो जायें। चंद्रमा के साथ-साथ सत्यपुरुष साहब भी पूर्ण हैं। उनकी उपासना से हम भी अपने जीवन में पूर्णता को प्राप्त कर लें, इसीलिए पूनोव्रत का अनुष्ठान किया जाता है।

वैज्ञानिक कारण :- हम जानते हैं कि चंद्रमा का सम्बन्ध जल से है। हमारे शरीर में भी ९० प्रतिशत जल है, अतः पूर्णिमा का प्रभाव हमारे विचारों परपड़ता है। पूर्णिमा एवं अमावस्या को समुद्र में ज्वार भाटा अधिक वेग से उत्पन्न होता है,उसी तरह हमारे शरीर में भी इस दिन अधिक उद्वेग उत्पन्न होता है। इस उद्वेग को रोकने के लिए, पूर्णिमा के दिन व्रत उपवास रखने का नियम बनाया गया है। उपवास का अर्थ केवल भोजन न ग्रहण करना नहीं है। उपवास-उप+वास दो शब्दों के योग से बना है। उप का अर्थ छोटा और वास का अर्थ निवास करना है। पूनोव्रत के दिन हम थोड़ी देर ही सही, अपनी आत्मा के पास, आत्मदर्शी सन्त सद्गुरु के पास बैठ सकें, ऐसा हम नियम बना ले। पूनो व्रत के दिन हमें पाँचों इंद्रियों के स्वाद से दूर रहना चाहिए। पूनोव्रत के दिन इस बात का सबसे अधिक महत्व है, कि किस प्रकार हम अपनी इंद्रियों को वश में करके अन्तर्मुखी, आत्म केन्द्रित करते हैं। इंद्रियों का केन्द्र मन है, मन को वश में करने से जीव, उन्मुनि रहनी (जहाँ मन की गति रुक जाती है) को प्राप्त करलेता है।

आत्म जागरण :-पूनो व्रत में रात्रि में जागरण किया जाता है। जागरण का अर्थ

॥ सत्यनाम ॥

आमुख

अनादि काल से जीवात्मा अनेक जन्मों से वासना, इच्छा, तृष्णा के अन्धकार से घिरी हुई है। मानव मन में इतना गहन अंधेरा व्याप्त है, कि उसकी आँख कभी सत्यपुरुष के प्रकाश कीओर नहीं उठ पाती है। परम पूज्य पंथ श्री हुजूर गृन्धमुनि नाम साहब ने अपने सारगर्भित संदेश में कहा है-''जीवन से अंधेरे को दूर भगाना है, उसे मिटा देना है, तो उसका एक ही मार्ग है कि हम सत्यपुरुष की ज्योति को अपने जीवन में उतार लें। पूर्णिमा पूर्ण प्रकाश का दिन है। दिन में तो प्रकाश होता ही है, इस दिन पूरी रात में प्रकाश रहता है। सत्यपुरुष स्वयं प्रकाशित हैं। यह जीव उनसे प्रकाश को पाकर प्रकाशित होता है। बाह्य प्रपंचमय जगत से अपने मन और समस्त इंद्रियों को हटाकर, सत्यपुरुष की भक्ति में लौलीन होना ही पूनोव्रत कहलाता है। जिस दिन हमारी यह साधना पूरी होगी, उसी दिन हमारा पूनोव्रत भी सफल हो जायेगा। फिर प्रतिमाह पूर्णिमा नहीं, प्रतिदिन प्रतिपल होगी।'' इस प्रकार पूर्णिमा अंधेरे की प्रवृत्ति पर विजय पाने और सत्यपुरुष के प्रकाश को हृदय में उतारने का पावन दिन है। सृष्टि रचना के पूर्व जब सत्यपुरुष स्वयं अकेले विराजमान थे, तो एक से अनेक होने की इच्छा के कारण, सृष्टि रचना का विचार उनके मन में उत्पन्न हुआ और सृष्टि का निर्माण प्रारम्भ हुआ तथा जीवों की उत्पत्ति हुई। जिस दिन सृष्टि रचनाका विचार सत्यपुरुष के मन में उपजा, उसी समय पूनो व्रत का विधान, जीवों के उद्धार के लिये, स्वयं सत्यपुरुष ने स्थापित किया। सत्यलोक से सत्यपुरुष के इस परम पावन सत्यव्रत (पूनोव्रत) को धरा पर लाने का श्रेय सद्गुरु कबीर साहब को है।

जा दिन उत्पत्ति पुरुष अनुसारा । ता दिन पूनो को विस्तारा ।
पुरुष जो मन में कीन्ह विचारा । पूनोव्रत मुक्ति विस्तारा ।

यह नहीं है, कि हम किसी सिनेमा हाल, थियेटर, मनोरंजन केन्द्र क्लब में बैठकर जागें, या गपशप में व्यर्थ का समय गंवायें। जागरण का अर्थ साहब का स्मरण करते हुए जागना है। ऐसा जागरण जिसमें मानव का रुपान्तरण हो सके। हम अपनी सुरति को साहब के ध्यान में लगा दें, जिससे उनका सतत् स्मरण होता रहे, परमात्मा की अनुभूति होती रहे।

सुरति रहे साहब के मांही, भजन करे मन भटके नांही ।
जागरण करे प्रेम लौ लावे, अमर होय सतलोक सिधावे ॥

परमात्मा कहीं गुम नहीं हो गये हैं, वे चारों तरफ प्रकाश की तरह विद्यमान है। आवश्यकता इस बात की है, कि हम अपनी अज्ञान निद्रा से जग जायें। 'श्वास-श्वास में नाम ले, वृथा श्वास मत खोय।' के अनुसार समस्त बाह्य प्रपंचों से मन को हटाकर सत्यपुरुष साहब के स्मरण में लगा देना ही परम जागरण है। जो जग गया, जिसने जाग्रत सद्गुरु की शरण ग्रहण कर ली, उसने परमात्मा को पा लिया। पूनो व्रत का दिन आत्म जागरण का दिन है, अपने जीवन को धन्य बनाने का दिन है। समस्त धर्म साधनायें, पूनो व्रत की साधना में समा गई है। यह सभी व्रत साधनाओं का मूल है, इसे हम अपने जीवन में उतार लें। भजन का अर्थ आलाप प्रलाप या शब्दों से गढ़ा गीत नहीं है और न वाद्ययंत्रों का संगीत है। अपनी सुरति को सद्गुरु साहब के स्मरण में लीन कर देना ही सच्चा भजन है। भजन का उद्देश्य आत्म सृजन, अखंडता का मनन, एकत्व की प्रतीति है।

परम पद मुक्ति की प्राप्ति :- आस्था, विश्वास ही व्यक्ति को परमात्मा के निकट ले जाता है, ऐसे व्यक्ति में कल्याण और परमार्थ की भावना कूट-कूटकर भरी होती है। कालपुरुष ने सभी मनुष्यों की बुद्धि पर अज्ञान, भ्रम, माया का पर्दा डाल दिया है, जिससे वह सत्यपुरुष की भक्ति नहीं कर पाता है और न अपने यथार्थ निज स्वरुप की प्राप्ति कर पाता है। सत्गुरु के बिना ज्ञान नहीं होता है और न अन्य कोई काल माया के चंगुल से जीव को बचा सकता है। सद्गुरु की भक्ति करने से अन्तःकरण शुद्ध होता है, आत्म ज्ञान का प्रकाश और परमात्मा की अनुभूति होती है। सत्यपुरुष समस्त सृष्टि के मूल हैं, आधार हैं। अतः उन्हीं की उपासना, पूजा अर्चना करने से मनुय उनकी दया दृष्टि से सत्यलोक का अधिकारी बन जाता है, अमर पद, मुक्ति पद को प्राप्त करता है। जैसे चुम्बक लोहे को आकर्षित कर लेता है, वैसे ही सच्चा प्रेम सद्गुरु से शीघ्र मिला देता है।

पूरणमासी सदा निवासी, अमरलोक से आई है ।

यही व्रत करो भाई साधो, बन्दी छोर बताई है ॥
सत्यनाम सुमिरण करो, राखो दृढ़ विश्वास ।
भवसागर ते जाय तरो, अमरपुरुष के पास ॥
व्रत रहो चित लायके, संत को लेय प्रसाद ।
कहैं कबीर धर्मदास सो, तरै सहित औलाद ॥

पूर्णिमा में सत्यपुरुष का सदा एकरस नित्य निवास है। इस सत्य व्रत की साधना, मानवमात्र को पूर्णनिष्ठा एवं अनुराग के साथ सदैव करनी चाहिये। सत्यव्रत का साधक अपने पूरे परिवार के साथ भवसागर के पार उतर जाता है। तीन लोकों के पार, सत्यपुरुष के सत्यलोक को प्राप्त कर भव बन्धन से मुक्त हो जाता है।

सर्व सिद्धियों की प्राप्ति :- मनुष्य को ईश्वर ने इसीलिए बनाया है कि वह अपने सर्वोच्च लक्ष्य निज स्वरुप को प्राप्त कर, निज लोक जहाँ से जीव आया है, वहीं पहुँच जाय। सद्गुरु की शरण में आये बिना, मनुष्य के संशय भ्रम का निवारण नहीं हो सकता है। सद्गुरु की सेवा पूजा अर्चना से मन की मलीनता दूर होती है, अन्तःकरण शुद्ध होता है, आत्म ज्ञान, परम पद की प्राप्ति होती है। सद्गुरु की दया से पूनो व्रत के साधक का लौकिक, पारलौकिक दोनों जीवन सँवर जाता है। उसका जीवन सुखमय, शान्तिमय आनन्दपूर्ण हो जाता है। उसे सर्व प्रकार की सिद्धियाँ, अष्ट सिद्धि, नव निधि का भंडार मिल जाता है ।अष्ट सिद्धियों (अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति प्राकाम्य (प्रकाशिका) ईशत्व, वशित्व (वशीकरण) तथा नवनिधियों (महापद्म, पद्म, कच्छप, मकर, मुकुन्द, खर्व, शंख, नील, कुन्द) की प्राप्ति के साथ उसे आवागमन से मुक्ति मिल जाती है। अतः पूनोव्रत की साधना, प्रत्येक प्राणी को सदैव पूर्णनिष्ठा भावना के साथ करनी चाहिए।

पूनोव्रत करै मन लाई । सर्व सिद्धिता घर में आई ॥
पूनोव्रत करै जो कोई । ताको आवागमन न होई ॥

बरसाइत महात्म्य :- भारत वर्ष में बरसाइत व्रत की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। इस दिन पूरे देश में बट वक्ष की पूजा की जाती है। बरसाइत व्रत के रहस्य की जानकारी बहुत कम लोगों को है। कबीर पंथ में बरसाइत व्रत का विशेष महत्व है। ज्येष्ठ पूर्णिमा के अवसर पर सद्गुरु कबीर साहब का प्राकट्य दिवस मनाया जाता है। पूरे विश्व में कबीर जयन्ती मनाई जाती है। सद्गुरु कबीर साहब जीवों को काल के चंगुल से

छुड़ाने के लिये अनेकों बार इस धरा पर अवतरित हुए हैं। सतयुग में सत्य सुकृत, त्रेता में मुनीन्द्र नाम, द्वापर में करुणामय नाम तथा कलियुग में कबीर नाम से प्रकट हुए हैं। कलियुग में १४ बार प्रकट हुए है। वंशगद्दी दामाखेड़ा में सद्गुरु कबीर साहब का प्राकट्य ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या बरसाइत के दिन मनाया जाता है। इसका कारण यह है कि सम्वत् ११२० में ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को बरसाइत के दिन सद्गुरु कबीर साहब बाल्यावस्था में जीवोद्धार हेतु कमल पुष्प पर प्रकट हुए थे। तब उन्हें देखकर चन्दन साहू की पत्नी, पालन पोषण हेतु अपने घर ले गई थी। लेकिन लोक-लाज एवं बदनामी के डर से, पति के त्रास देने पर बेचारी स्त्री उन्हें पुनः जल में डुबो आई थी। इसी स्मृति में बरसाइत तिथि व्रत के रुप में मनाई जाती है। इस दिन सद्गुरु की पूजा आरती के बाद, दोपहर में भोजन करने का विधान है। इसके बहुत बाद में, संवत १४५५ में सद्गुरु कबीर साहब का प्राकट्य काशी के लहर तारा तालाब में कमल पुष्प पर हुआ था तथा नीरु-नीमा को दर्शन प्राप्त हुआ था। बरसाइत व्रत की महिमा के सम्बन्ध में सद्गुरु कबीर साहब ने कहा है-

बरसाइत सम तिथि नहि आना। पार ब्रह्म अवतार अमाना॥
सम्वत भर के दोष नसाई। प्रति सम्वत यह कीजै भाई।
पातक जितने लागे अंगा। सुनतहि सकल होय ते भंगा॥
प्रकट जन्म तिथि आदि अनूपा। सकल व्रत को है यह भूपा॥
जिनको मम बचन की आशा। सो जन निश्चय गहे विश्वासा॥

पूनो व्रत प्रत्येक माह पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। बरसाइत व्रत वर्ष में एक बार बरसाइत के अवसर पर, मानव के द्वारा की गई भूल चूक एवं समस्त दोषों के निवारण के लिए मनाया जाता है। सद्गुरु कबीर साहब द्वारा स्थापित, पूनो एवं बरसाइत दोनों व्रतों का पालन, आध्यात्मिक उन्नति तथा अपने जीवन को सुन्दर, सुसंस्कृत, सुख शान्तिपूर्ण व सम्पन्न बनाने हेतु, प्रत्येक कबीर पंथानुयायी को अवश्य करना चाहिए। इन व्रतों का पालन किसी भी जाति या कुल में उत्पन्न व्यक्ति कर सकता है। केवल किसी वर्ग विशेष, सम्प्रदाय विशेष या जाति विशेष के लिए इनका विधान नहीं है। यह व्रत सम्पूर्ण मानव जाति के लिए, सत्यपुरुष परमात्मा को प्राप्त करने का अनुष्ठान है, सोपान है।

सद्गुरु के वचनों की टीका या भावार्थ लिखना, मेरे जैसे अल्पज्ञ के वश की बात नहीं है। सद्गुरु कबीर साहब की अनन्त कृपा दृष्टि और परम पूज्य पंथ श्री हुजूर प्रकाशमुनि

नाम साहब की प्रेरणा से, मैने इस सद्ग्रन्थ का सरल भाषा में मात्र अनुवाद करने का प्रयास किया है। इसमें आई हुई त्रुटियों के लिये मैं क्षमा प्रार्थी हूँ। मुझे यदि परम श्रद्धेय भानुप्रताप गोस्वामी जी का प्रोत्साहन एवं सहयोग न मिला होता, तो इसे पुस्तक के रुप में आपके समक्ष प्रस्तुत कर पाना सम्भव न होता। इसके लिये मैं उनका हार्दिक रुप से कृतज्ञ हूँ। इस सद्ग्रन्थ के लेखन कार्य में मेरी सुपुत्री अंजली सिंह ने जो सराहनीय योगदान दिया है, उसके लिए मैं उनका आभारी हूँ। आशा है कि इस सद्ग्रंथ के अध्ययन से समस्त सत्य के पिपासुजन आत्म कल्याण के पथ पर अवश्य अग्रसर होंगे।

विनीत

डॉ. पारसनाथ सिंह

॥ सत्यनाम ॥

अथ वृहत पूनो महात्तम प्रारम्भ

सद्गुरु कबीर साहब के प्रमुख शिष्य धनी धर्मदास साहब काजीवन धन्य है। जीवन उसी व्यक्ति का धन्यहोता है,जिसे पूर्ण समर्थ सद्गुरु मिल जायें और वह उनके चरणों में स्वयं को सपर्पित कर दे। धर्मदास साहब धन के धनी तो थे ही, सद्गुरु के सदुपदेश से परम सत्य को पाकर वे परम सम्पदा, मुक्ति के भी धनी बन गये। उनके नाम के आगे 'धनी' शब्द का प्रयोग होने लगा। उन्होंने देखा कि लोग काल, माया के चंगुल में फंस कर बार-बार जन्म मरण के चक्र में पिसे जा रहे हैं। अतः जीवों को दुखी देखकर उन्होंने सद्गुरु कबीर साहब से लोक कल्याणार्थ, जीवन जगत से सम्बन्धित अनेक प्रश्नों को पूछा। सद्गुरु कबीर साहब बोलते जाते थे और धनी जी लिखते जाते थे।

आज कबीर पंथ में सद्गुरु कबीर धर्मदास संवाद के रुप में अनेकों ग्रन्थ उपलब्ध है। धनी धर्मदास साहब कबीर पंथ के प्रवर्तक और विनम्रता की साक्षात प्रतिमूर्ति है। उन्होंने सद्गुरु कबीर साहब से जब भी कोई प्रश्न पूछा तो अत्यंत विनयपूर्वक हाथ जोड़कर, चरण टेककर पूछा है। यह उनके व्यक्तित्व की महानता है। यह सत्य है कि धनी धर्मदास जीसाहब सद्गुरु कबीर साहब की भक्ति में लीन होकर, उनके रंग मेंपूरी तरह रंग गये थे, एकाकार हो गये थे।

गुरु समाना शिष्य में, शिष्य कर लिया नेह ।
विलगाये विलगहि नहिं, एक प्राण दुई देह ॥

धर्मदास वचन

धर्मदास बिनती इक ठानी, सतगुरू मोहि कहो बिलछानी ।
जबही रही अचेत सुरति मोरा, मास ब्रत रहेऊं गुरू पूरा ।
अब गुरू पूर मिलेउ प्रभु मोही, सत्य ब्रत अब कहो विदेही ।
कौन ब्रत में सुरति लगाई, सतगुरू मोहि कहो समुझाई ।

धनी धर्मदास जी साहब लोक कल्याण का दृढ़ संकल्प लेकर, सद्गुरु कबीर साहब के श्री चरणों में विनती करते हुए कहते हैं कि हे सद्गुरु ! मुझे लक्ष्य करके विलक्षण सत्यव्रत के सम्बन्ध में बताने की कृपा करें। जब मेरी सुरति अज्ञानावस्था में थी, तो मैंने पूरे माह भर का व्रत धारण किया था। यह मेरा सौभाग्य है कि आप जैसे पूर्ण सद्गुरु अब मुझे मिल गये हैं। अतः हे विदेही सद्गुरु ! अब मुझे सत्यव्रत (पूनोव्रत) क्या है ? बताने की कृपा करें। हे सद्गुरु ! मुझे समझाकर बतायें कि मैं किस व्रत में अपनी सुरति को लगाऊँ।

सतगुरू वचन

धर्मदास तुम बुझेहु मोही, ब्रत कथा कहों मैं तोही ।
जो सत्य ब्रत पुरूष को होई, सो समुझाय कहों मैं तोही ।
निश्चय ब्रत पुरूष को आहीं, सो धर्मनि परखो हिय मांही ।

सद्गुरु कबीर साहब धर्मदास जी की प्रबल जिज्ञासा, निष्ठा भावना को देखकर उन्हें व्रत कथा सुनने का सुयोग्य अधिकारी समझ कर कहते हैं कि हे धर्मदास ! तुमने व्रत कथा के सम्बन्ध में पूछा है तो सत्यपुरुष की उपासना का जो सत्यव्रत है, उसके सम्बन्ध में तुम्हें समझाता हूँ। हे धर्मदास ! यह पूनोव्रत, निश्चित रूप से सत्यपुरुष की उपासना का व्रत है, इसे तुम अपने हृदय में भली-भाँति धारण करो।

ब्रत प्रभाव धर्मनि सुनो, तोहि कहो समुझाय ।
निज यह ब्रत अमर पद, जो नर निश्चय ध्याय ॥

हे धर्मदास ! मैं तुम्हे सत्यव्रत के प्रभाव के बारे में समझाता हूँ कि इस व्रत को जो व्यक्ति दृढ़ निश्चय के साथ धारण करता है, उसे निश्चित रूप से अमरपद, मुक्ति पद की प्राप्ति होती है।

पूनो आदि है पुरूष निवासा, सुरति नाम अमी अंक प्रकाशा ।
तुम जो प्रश्न कियो धर्मदासा, आदि पूनो करों प्रकाशा ।
पुरूष मोहि निश्चय ब्रत दीन्हा, अंक त्रितीय जोरि मैं लीन्हा ।
पूनो ब्रत पुरूष को होई, सुरति हंस निःअक्षर समोई ।

निकले सत्य वचन का पालन करता है और जिसकी सुरति सत्यनाम में लीन रहती है, ऐसे सत्यव्रती मनुष्य को मुक्ति की प्राप्ति होती है, उन्हें बार-बार चौरासी लाख योनियों में भटकना नहीं पड़ता है।

धर्मदास वचन

धर्मदास दोनों कर जोरी, सतगुरू सुनिये बिनती मोरी ।
लोक ब्रत मोहि कहो बुझाई, जासो काल दगा मिट जाई ।
जो कुछ भेद अहै प्रभु आगर, सो कहिये हंसन पति नागर ।

धनी धर्मदास जी साहब दोनों हाथ जोड़कर सद्गुरु कबीर साहब से विनती करते हैं कि हे सद्गुरु ! जिस सत्यव्रत को पालन करने से काल का समस्त जाल मिट जाता है, उसे बताने की कृपा करें। हे भक्तों के परम आराध्य सद्गुरु ! पूर्णिमा व्रत के अन्य जो भी रहस्य हैं उसे बताने की कृपा करें।

सतगुरू वचन

कहैं कबीर धर्मनि सुनि लेऊ, पूनो ब्रत निश्चय तोहि देऊ ।
कोटिन यज्ञ करे जो कोई, कोटि तीर्थ करि आवै सोई ।
सकल पृथ्वी फिरि आवे जोई, सो इक पूनो ब्रत फल होई ।
सांचे दिल सो बरते सोई, धर्म अर्थ सब सुकृत होई ।
यह जो ब्रत करे मन लाई, दुख दारिद्र सकल मिटि जाई ।
रात्रि जागरण करे बनाई, नृत्य गीत वाजिन्त्र बजाई ।
बहु स्तुति सो जागरण करई, अमर लोक में जा पगु धरई ।
जे नर करे प्रीति मन लाई, सुरति निरति हंसा घर जाई ।
पूनो दिन के पीछे जानी, भोजन एक जून परमानी ।
पूनो प्रभात स्नान कराई, स्वेत वस्त्र ले हृदय लगाई ।
नेम आचार से रहे पुनीता, अष्ट पहर पुनि रहे अवधूता ।
कूर कपट भाखे नहिं भाई, सत्यनाम को सुमिरण लाई ।

सत्य ब्रत मैं कहों समुझाई, जासो पाप सकल क्षय जाई ।
निर्गुन ब्रह्म सगुण अवतारा, जासो जीव होय निस्तारा ।
पूनो ब्रत करे जो कोई, ताको आवागमन न होई ।
काम क्रोध मद लोभ भुलावै, निन्दा इरषा दूर बहावै ।
कर्म भर्म पर आस बिसारे, सतगुरू चरण कमल चित्त धारे ।
सत्य शब्द में रहे समाई, बहुरि न हंसा योनिन आई ।

इस सृष्टि के प्रारम्भ में, जब स्वयं सत्यपुरुष अकेले विद्यमान थे, उसी समय से पूनोव्रत की परम्परा चली आ रही है। उसी आदि पूनोव्रत के सम्बन्ध में बताते हुए सद्गुरु कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास ! इस आदि पूनोव्रत में सत्यपुरुष का सदा एक रस नित्य निवास है। जिस प्राणी की सुरति सत्यपुरुष के आदि नाम से जुड़ जाती है, उसके हृदय में अमृत तत्व का प्रकाश प्रकट हो जाता है।

हे धर्मदास ! तुमने पूनो व्रत के सम्बन्ध में प्रश्न पूछा है तो आदि पूनोव्रत के सम्बन्ध में, तुम्हे विस्तार से सुनाता हूँ। यद्यपि इसमें कोई संदेह नहीं है कि स्वयं सत्यपुरुष ने मुझे इस पूनोव्रत को धारण करने का आदेश दिया था, लेकिन मैने तीनों लोकों के सभी जीवों के कल्याण के लिए, तीनों लोकों का सम्बन्ध इस व्रत से जोड़ दिया है। यह पूर्णिमा व्रत सत्यपुरुष की प्राप्ति के लिए किया जाने वाला व्रत है। अनुरागी हंस जीवों की सुरति निरन्तर सत्यपुरुष के निःअक्षर सत्यनाम से जुड़ी रहती है।

धर्मदास जी को समझाते हुए सद्गुरु कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास ! इस पूर्णिमा व्रत (सत्यव्रत) को धारण करने से मनुष्य के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। निर्गुण निराकार ब्रह्म को सगुण साकार रुप में जीवों के कल्याण हेतु अवतरित होना पड़ता है (ज्ञात हो कि निर्गुण निःअक्षर आदि पुरुष सत्यपुरुष स्वयं कलियुग में, काशी के लहरतारा तालाब में, सद्गुरु कबीर के रुप में, कमल पुष्प पर अवतरित हुए थे।) जो मनुष्य नियमित रूप से पूर्णिमा व्रत का पालन करता है, उसे बार-बार शरीर धारण करके, आवागमन के चक्र से मुक्ति मिल जाती है।

जो मनुष्य काम, क्रोध, मद, लोभ आदि विकारों को मिटाकर, निन्दा, ईर्ष्या आदि दुर्गुणों से दूर रहता है तथा निःस्वार्थ भाव से सत्कर्म करते हुये अपने समस्त भ्रम संदेह को मिटाकर, सद्गुरु के चरण कमलों से अनुराग रखता है, सद्गुरु के मुखारविन्द से

परिवा लगन पूनो के पीछे जानी, घरी बत्तीस चालीस अनुमानी।
अर्ध रात्रि लौं पूनो होई, ता दिन ब्रत करो पुनि सोई ।
दिन आधे से चौदस होई, ऊपर पूनो मिल समोई ।
ता दिन ब्रत करो हो भाई, मन स्थिर हो ध्यान लगाई ।
चार पहर को जागरन कीजै, घर में बैठ के भिन्न रहीजै ।
चार पहर नहिं बनि आवे, अर्ध रात्रि लौ हृदय जगावे ।
पहर मांहि घरी ठहरावे, बिना मन्त्र जागरन न करावे ।
होमे अगिन काष्ठ की नाई, सकल पाप सहजे मिटि जाई ।
पूनो ब्रत करे जागरन नहिं करई, ताको फल निष्फलता धरई।
जागरन करे मेरो गुन गावे, अमर होय बहुरि नहि आवे ।
पूनो प्रभात भोजन कराई, सन्त साधु को आदर लाई ।
संत पवाय आप तब पावे, सोइ जीव सतलोक सिधावै ।
घृत पकवान की करै रसोई, सब संतन को भोजन देई ।
संतन को चरणामृत लीजै, हृदय प्रेम सदा पुनि कीजै ।
ताको सतगुरू सदा सहाई, बांह पकड़ जीव लोक सिधाई ।
पूनो कथा जो सुने सुनावे, आप तरे औरन को तरावे ।
उच्छिष्ठ भोजन कबहुं न करावे, पर घर भोजन करन न जावे।
गुरू की सेवा सत्य ही बोले, पूनो ब्रत कबहुं नहि डोले ।
पूनो ब्रत सदा प्रति कीजे, मास मास देही सुख लीजे ।
आप करे औरन करवावे, ताका फल कोउ पार न पावे ।
पूनो ब्रत इन्द्री दृढ़ राखे, हृदय नाम पुरूष को भाखे ।
पूनो छेड़ और ब्रत करहीं, सो प्राणी भव सागर परहीं ।
सत्यनाम गहे एकहि धारा, सो हंसा है पुरूष पियारा ।
यह तो ब्रत पुरूष को होई, दुख दारिद्र सकल पुनि खोई ।
पूनो ब्रत करो रे भाई, ऋद्धि सिद्धि बहुते सो पाई ।
सुकृत होय तो भक्तिहि पावै, गर्भवास में बहुरि न आवै ।

एक बार हिय कहैं कबीरू, सुमिरत नाम मिटे जम पीरू ।
रूप कबीर निरखे दिन राती, हृदय ब्रत करे बहु भांती ।
संयम जे नर करे बनाई, पान प्रसाद ले तहां धराई ।
जौन मास में पूनो आवे, रकम रकम के सुगन्ध मंगावे ।
सो सुगन्ध ले पास धराई, ले मृतिका पुनि चौक पुराई ।
तापर कनिक को चौक पुरावे, पल्लो सहित कलश धरवावे ।
तापर दीपक बारे भाई, गऊ घृत दीप भरे पुनि आई ।
पान आम के झालर तानी, मेवा अष्ट केरा परवानी ।
सब संयुक्त पुनि करे बनाई, साधु सन्त को ले बैठाई ।
नरियर पांच सवासौ पाना, सवा सेर नैवेद्य धराना ।
सब विधि साज धरे पुनि आई, गुरू साधू को आदर लाई ।
पूनों पाठ पठन पुनि लागू, श्रोता वक्ता सुनि अनुरागू ।
अर्थ विचारे सभा सुनावे, सब संतन को दे समझावे ।
जो कोई अधिकारी रहई, ताका भेद याहि विधि लहई ।
पूनो पाठ सम्पूरन होई, नरियर पांच मोरे पुनि सोई ।
जो नहिं कोउ अधिकारी पाई, पूजा नरियर धरे उठाई ।
तब समरथ को भोग लगाई, पान प्रसाद पुनि देइ बटाई ।
सवा सेर तन्दुल धरवाना, गऊ क्षीर पुनि आनि परमाना ।
दिन के भोजन नहिं कराई, रात्रि भोजन कीजै भाई ।
खीर खांड़ घृत भोजन करई, साहेब नाम हृदय में धरई ।
सब पकवान पुनि धरे बनाई, तब साहेब को भोग लगाई ।
शंख झांझ अरू बाजे तूरा, भोग लगावे सत्य कबीरा ।
अपने हाथ सो दीपक बारे, सो समरथ की आरति उतारे ।
चन्द्र लगन में ध्यान धरीजे, सूर्य लगन में भोजन कीजे ।
चौदस लगन पूनो सुख दाई, परिवा लगन पूनो दुख दाई ।

चौका स्थल पर पाँच नारियल, सवा सौ पान, सवा सेर नैवेद्य (भोग लगाने का प्रसाद) आदि सभी सामग्री को रखकर चैतन्य गुरु को आदरपूर्वक बैठाना चाहिये। सभी तैयारी हो जाने के बाद पूर्णिमा व्रत कथा का पाठ करना चाहिये, जिससे सभी श्रोता एवं पाठ करने वाले के हृदय में, अनुराग की उत्पत्ति हो। सत्संग सभा में पूनोव्रत कथा के अर्थ को भली-भाँति विचार कर सभी साधु-सन्तों को सुनाना चाहिये। यदि सौभाग्य से चौका आरती के समय वंशगद्दी के कोई पंजाधारी महन्त या नारियर मोरने के अधिकारी उपस्थित हों, तो उनसे पूनो पाठ सम्पूर्ण होने के पश्चात पाँचों नारियर मोरवा लें। जिनको वंशगुरु की ओर से नारियर मोरने का अधिकार प्राप्त हो, वही नारियल मोरने का कार्य कर सकते हैं। यदि ऐसा कोई अधिकारी नहीं मिलता है, तो पूनम पूजा में आये हुए सभी नारियर उठाकर रख दें, और केवल पान प्रसाद का भोग लगाकर पूजा समाप्त करें।

समर्थ सद्गुरु को भोग लगाने के बाद पान प्रसाद को सभी भक्तों में बाँट दे। सवा सेर चावल और गाय के दूध को लाकर रख दें, दिन में भोजन न करें, रात्रि में ही भोजन करना चाहिये। भोजन में खीर, खांड़, घृत का प्रयोग करें तथा साहब का नाम सदैव हृदय में स्मरण करें। सभी पकवान बनाकर सुरक्षित रख दें, तब साहब को भोग लगायें। शंख, झांझ, तूरा आदि वाद्य यंत्रों को बजाते हुये सत्य कबीर साहब को भोग लगाना चाहिये। अपने हाथों से दीपक जलाकर समर्थ सद्गुरु साहब की आरती उतारना चाहिये। चन्द्र लग्न के मुहूर्त में ध्यान, स्मरण करें तथा सूर्य लग्न में भोजन ग्रहण करें।

जिस दिन चतुर्दशी और पूर्णिमा का मिलन होता है, उसी दिन पूर्णिमा व्रत रखना चाहिये। परिवा लग्न (प्रतिपदा) होने पर व्रत नहीं रखना चाहिये। परिवा लग्न शुरु होने के पहले बत्तीस से चालीस घड़ी का अनुमान लगाकर जिस दिन अर्धरात्रि तक पूर्णिमा लग्न रहती है, उसी दिन व्रत रखना चाहिए। पूर्णिमा व्रत, जिस दिन चतुर्दशी होती है और पूर्णिमा तिथि आकर मिलती है, उसी दिन रखना चाहिये। एकाग्र मन से साहब का ध्यान करना चाहिये। पूर्णिमा व्रत के दिन चार प्रहर का जागरण करना चाहिये तथा घर में बैठकर, समस्त बाह्य प्रपंचों से मन को हटाकर, साहब का स्मरण करना चाहिये। यदि चार प्रहर तक जागना संभव न हो तो अर्धरात्रि तक अवश्य जागना चाहिये।

यदि एक प्रहर का जागरण करना सम्भव न हो तो एक घड़ी का जागरण नाम-स्मरण करते हुये करने से, मनुष्य के पाप उसी प्रकार नष्ट हो जाते हैं, जैसे अग्नि को पाकर

धनी धर्मदास जी साहब के दृढ़ संकल्प को देखकर, सद्गुरु कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास ! तुम निश्चित रूप से पूनो व्रत को धारण करो। किसी प्राणी को करोड़ों यज्ञ करने पर, कोटि तीर्थों का भ्रमण करने पर पूरी पृथ्वी की परिक्रमा करने पर, जो पुण्य फल मिलता है, वह सब केवल एक बार पूनो व्रत धारण करने पर ही मिल जाता है। पूनो व्रत का पालन पूरी निष्ठा के साथ, सच्चे हृदय से करने पर, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति होती है। इस व्रत को मन लगाकर, एकाग्रचित होकर धारण करने पर मनुष्य के सभी प्रकार के दुख दारिद्र का अन्त हो जाता है।

पूनोव्रत के दिन रात में जागरण करना चाहिये तथा सत्यपुरुष का ध्यान, भजन, पूजन, नृत्य, गीत, वाद्य यंत्रों के साथ करना चाहिये। जो प्राणी सत्यपुरुष का ध्यान और वन्दना करते हुये रात्रि में जागरण करता है, उसे अमरलोक की प्राप्ति होती है। जिसकी सुरति सत्यपुरुष साहब से लग जाती है,जिसके हृदय और मन में अतिशय प्रेम होता है, वह प्राणी निश्चित रुप से सत्यलोक को जाता है। पूर्णिमा व्रत के दिन, रात्रि में सन्ध्या-आरती करने के बाद, एक बार भोजन करना चाहिये। पूर्णिमा व्रत के दिन प्रातःकाल स्नान करके स्वच्छ, श्वेत वस्त्र धारण करना चाहिये, पूनो व्रत के दिन संयम नियम का पालन करते हुये, पवित्र मन से आठों पहर अपनी वृत्तियों को मनसा-वाचा-कर्मणा सद्गुरु के ध्यान में लगाना चाहिये।

मन को समस्त छल-कपट से हटाकर, सत्यनाम का सुमिरण करना चाहिये तथा कभी भी कठोर वचन नहीं बोलना चाहिये, सच्चे हृदय से सद्गुरु कबीर साहब के नाम का एक ही बार स्मरण करने से, यम की यन्त्रणा से मुक्ति मिल जाती है। सच्चा भक्त वही है, जो दिन रात सद्गुरु कबीर साहब के स्वरुप का ध्यान करता है और हृदय से उनकी वंदना करता है। पूनोव्रत के दिन संयम नियमपूर्वक रहते हुये, पान प्रसाद एकत्रित करना चाहिए। माह में जब पूर्णिमा व्रत का दिन पड़ता है, तो उस दिन अनेक प्रकार के सुगन्धित पदार्थ एकत्रित कर, चौका आरती की तैयारी करना चाहिये, सत्यपुरुष की पूजा के लिए मिट्टी से चौक पूरना चाहिये। शुद्ध भूमि पर गेहूँ के आटे से चौक पूरकर, आम के पल्लव सहित कलश रखना चाहिये, गाय के शुद्ध घी से भरा दीपक जलाना चाहिये। आम और पान के झालर को सजाकर, अष्टमेवा और केला रखना चाहिये। सभी चीजों को विधिवत रखकर साधु-सन्तों को यथोचित स्थान पर बैठाना चाहिये।

देह अशुद्ध पूनो ब्रत आवे, कैसे अशुद्ध में ब्रत रहावे ।
ताकी महिमा कहो समुझाई, सो मैं राखौं हृदया मांहि ।
सो साहेब कवने विधि कीजै, सत्य कहो कस ब्रत रहीजै ।
सो बरनन गुरू भाखो हमहीं, ब्रत भाव हृदय मम धरहीं ।

धर्मदास जी साहब विनयपूर्वक सद्गुरु कबीर साहब से कहते हैं कि हे सद्गुरु ! मैं पूनो व्रत का पालन नियमपूर्वक पूर्ण निष्ठा के साथ करूँगा, लेकिन सुख-दुख आदि विपरीत परिस्थितियों में किस प्रकार व्रत धारण किया जाये ? अशुद्ध देह से व्रत का पालन किस प्रकार किया जाये ? इस सम्बन्ध में, हे सद्गुरु ! मुझे सविस्तार बताने की दया करें-

सतगुरू वचन

कहैं कबीर सुनो धर्मदासा, सकल भेद मैं करों प्रकाशा ।
दास एक बणिक् सो वेशा, जिन लीन्हों है गुरू उपदेशा ।
नारी पुरूष एक मत कीन्हा, भाव भक्ति परवाना लीन्हा ।
स्त्री पुरूष दोऊ मम दासू, मन स्थिर कर सुनो धर्मदासू ।
मन बच कर्म गुरू पद पूजा, देव भाव मन और न दूजा ।
पूनो ब्रत करे चित धारा, पतिब्रता घट माहीं सुधारा ।
पूनो ब्रत करे दोऊ प्रानी, तासु कथा मैं कहौं बखानी ।
तेहि पीछे एक भेद बताऊं, मन स्थिर के सुनों प्रभाऊ ।
तेहि दास की दासी गर्भाऊ, नवो मास पुन पूरण आऊ ।
एक दिन पुरूष बनिज को जाई, घर में संपति नाहिं रहाई ।
भयो पुत्र पुनि मंगल गायो, लग परोस की नारी बुलायो ।
पूनो ब्रत वाहि दिन आवा, सब नारिन मिल बचन सुनावा ।

सद्गुरु कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास ! इसका सम्पूर्ण रहस्य मैं तुम्हें बताता हूँ। एक व्यापार करने वाले वैश्य ने गुरुदीक्षा ली थी। स्त्री-पुरुष दोनों ने एकमत होकर,

सूखी लकड़ी जल जाती है। पूर्णिमा व्रत में, जो जागरण नहीं करता, उसे व्रत करने का कोई फल नहीं मिलता है। सद्गुरु कबीर साहब कहते हैं कि पूर्णिमा व्रत में, जो मनुष्य जागरण करते हुये मेरा गुणगान करता है, वह अमरत्व को प्राप्त कर, दुबारा शरीर धारण कर संसार में नहीं आता है। पूर्णिमा के दिन प्रातः साधु-संतों को आदरपूर्वक भोजन कराना चाहिये। जो जीव संतों को भोजन प्रसाद देने के बाद स्वयं प्रसाद ग्रहण करता है, वही सत्यलोक को जाता है। संतों को घृत से बने हुये भोज्य पदार्थ खिलाना चाहिये, संतों का चरणामृत प्रेमपूर्वक ग्रहण करना चाहिये। संतों की सेवा करने वाले व्यक्ति की सहायता स्वयं सद्गुरु करते हैं और उसकी बांह पकड़कर सीधे सत्यलोक को ले जाते हैं। पावन पूनोव्रत कथा को जो स्वयं पढ़ता है और दूसरों को भी सुनाता है, वह स्वयं तो मुक्ति प्राप्त करता ही है, दूसरे को भी तार देता है। पूर्णिमा के दिन जूठा भोजन कभी नहीं खाना चाहिये तथा दूसरे के घर भोजन करने नहीं जाना चाहिये। पूनोव्रत का पालन पूर्णनिष्ठा के साथ सदैव करना चाहिये तथा गुरु की सेवा करते हुये सत्यवचन बोलना चाहिये। पूनोव्रत का पालन प्रत्येक माह नियमित रूप से करने से, भौतिक सुख शांति की प्राप्ति होती है। स्वयं व्रत को धारण करने तथा दूसरे को प्रेरित करने से अपार पुण्य की प्राप्ति होती है। पूर्णिमा के दिन सभी इन्द्रियों को वश में करके, हृदय में सत्यपुरुष का सदैव स्मरण करना चाहिये। यह सत्यपुरुष का व्रत है, इसे छोड़कर, अन्य व्रत को धारण करने वाला व्यक्ति भवसागर में पड़कर गोते खाता रहता है। सत्यपुरुष को वही हंस जीव प्रिय है, जो सदैव सत्यपुरुष के सत्यनाम का स्मरण करते हैं। यह कलियुग में साक्षात सत्यपुरुष का व्रत है, जिसका पालन करने से मनुष्य के सभी प्रकार के दुख दारिद्र नष्ट हो जाते हैं। पूनो व्रत को धारण करने से सद्गुरु की दया से, मनुष्य को अनेक प्रकार की ऋद्धियों और सिद्धियों की प्राप्ति होती है सद्गुणों और सत्कर्मों के अमिट प्रभाव से, जिसके हृदय में प्रेम भावना विकसित होती है, उसी को सद्गुरु की भक्ति मिलती है और सद्गुरु की भक्ति धारण करने से उसे जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति मिल जाती है, गर्भवास में आकर दुबारा शरीर धारण नहीं करना पड़ता है।

धर्मदास वचन

धर्मदास विनती अनुसारी, साहेब सुनियो अर्ज हमारी ।
पूनो ब्रत नेम मन दीन्हा, दुख सुख मैं कैसे के चीन्हा ।

जबही दुख हृदय में आवे, निश्चय नाम गुरू को गावे ।
तबही गुरू पुनि होय सहाई, निश्चय दुख सकल मिट जाई ।
जन्मे पुत्र भये दुःख आनी, सतगुरू नाम जपेऊं मैं जानी ।
आज ब्रत पूनो जो आई, दिल से ब्रत रहों मैं भाई ।
पूनो ब्रत करों नित नेमा, कैसे छोड़ों सतगुरू प्रेमा ।
पूनो दिन भोजन नहीं कीजै, सत सुमिरन हृदय धर लीजै ।
चार पहर बीते सखी भाई, पाचवां पहर चन्द्र को आई ।
तब करों अन्न औ पानी, ब्रत मोर सम्पूरण जानी ।
ऐसे बैठि ब्रत ना तजहूं, साहेब नाम हृदय में भजहूं ।
ऐसे कहत सांझ होय गयऊ, नारी ब्रत सम्पूरण भयऊ ।
रैन भई तब चढ़ी रसोई, घृत पकवान बने बहु सोई ।
सतगुरू दया प्रगट जब कीन्हा, दुख दारिद्र सकल हर लीन्हा।
ताही समय सन्त दोय आये, नारी देख बहुत हर्षाए ।
थारी ले चरणोदिक लीन्हा, गृह मांहि तब आसन दीन्हा ।
बालक छांड़ि सन्त पहं आई, बड़े भाव से आदर लाई ।
आज ब्रत सम्पूरण भयऊ, जबे सन्त पुनि दाया कियऊ ।
भये पकवान व्यंजन जब सोई, बड़े प्रीति सो पारस होई ।
सन्त दोय जब बैठे आई, ताल मृदंग अरु शंख बजाई ।
पात्र लाय धरे पुनि आगे, भोग लगावन सम्रथ लागे ।
भोग लगाय सन्त जब पाये, महाप्रसाद नारी तब खाये ।
करि भोजन जो बैठे दोई, पुरूष ध्यान की आसा होई ।
पुरूष दया सन्त जो आवे, दर्श पुरूष को तुरतहिं पाये ।
ताते वास लोक में दीन्हा, अमृत भोजन तुरतहि कीन्हा ।
सोना रूपा वासन पाई, अन्न धन की कमी कछु नांई ।
नारी सुभाव भक्त पुनि सोई, ऐसे जीव कोई विरला होई ।
ताते सकल कर्म मिटि जाई, सतगुरू चरण में आनि समाई ।

भाव भक्ति के साथ परवाना लिया था, स्त्री-पुरुष दोनों मेरे भक्त थे। हे धर्मदास ! तुम स्थिर चित्त होकर उनकी कथा सुनो। मनसा, वाचा, कर्मणा दोनों के मन में गुरु चरणों की सेवा के अतिरिक्त, अन्य किसी देव की पूजा का कोई भाव नहीं था। दोनों पूर्ण श्रद्धा से पूनोव्रत धारण करते थे। स्त्री पूर्णरुपेण पतिव्रता थी, दोनों नियमपूर्वक पूर्णिमा व्रत रखते थे। उनकी कथा मैं तुम्हे सुनाता हूँ और उनकी कथा के सम्बन्ध में एक रहस्य की बात भी सुनाता हूँ। तुम स्थिर मन से उनकी कथा सुनो। उस सेवक की पत्नी गर्भवती हुई और गर्भ का नवाँ महीना पूर्ण हो गया। घर में सम्पत्ति न होने के कारण एक दिन वह सेवक व्यापार के लिये बाहर चला गया। उसके पश्चात्, पुत्र उत्पन्न होने के बाद, उसकी स्त्री ने मंगलगान के लिये, पड़ोस की नारियों को अपने घर आमंत्रित किया। उसी दिन पूर्णिमा का व्रत आ गया, तब सभी नारियों ने मिलकर यह कहा-

सब स्त्री बचन

सुनो सखी तुम बचन हमारा, यह तो ब्रत छूति परिहारा ।
सूतक मांहि ब्रत ना कीजै, कहा हमारो मान करीजै ।
दूसर ब्रत आवे पुनि जोई, ता दिन ब्रत करो तुम सोई ।
अब तुम आप रसोई कराओ, वेगि आज अन्न जल पाओ ।

नारियों ने कहा कि हे सखी ! तुम हमारी बात सुनो। यह पूनोव्रत तुम्हारी अशुद्ध दशा में पड़ गया है, इस अशुद्ध सूतक दशा में, हमारी बात मानकर, व्रत न धारण करो। जब अगली बार पूर्णिमा आयेगी, तब तुम पूनोव्रत धारण कर लेना। अब तुम उपवास न रखकर, रसोई बनवाकर, शीघ्र अन्न जल ग्रहण करो।

पुत्र की माता बचन

तब मुख बोली पुत्र की माता, सब सखियन से बोली बाता ।
देह अशुद्ध हृदय शुद्ध नेका, कैसे छोड़ों सतगुरू टेका ।
अशुद्ध देह में प्राण तजाई, कहू सखि जीव कहां को जाई ।
भल तुम मता सुनायो आई, जीते मोहि चौरासी नाई ।
जबही दुख होय तन मांही, तबहु न चेतहिं यह संसारी ।

के भोजन के पश्चात सत्यव्रता नारी ने उनका महाप्रसाद ग्रहण किया। भोजन प्रसाद पाने के बाद दोनों सन्त सत्यपुरुष के ध्यान में लीन हो गये। सत्यपुरुष की दया से ही सन्तों का आगमन होता है और संत दर्शन में ही सत्यपुरुष का दर्शन होता है।

सद्गुरु ने नारी की भक्ति भावना को देखकर सत्यलोक में स्थान दिया, जहाँ उसे अमृत भोजन की प्राप्ति हुई। इस लोक में भी उसे सोना, चांदी, बर्तन, वस्त्र आदि तमाम धन की प्राप्ति हुई, जिससे उसे कभी अन्न धन की कमी नहीं हुई। ऐसी परम भक्त सत्यव्रता नारी की भाँति, संसार में विरले ही जीव होते हैं। जिनके समस्त भवबन्धन कट जाते हैं और वे सद्गुरु के चरणों में शरण पाते हैं।

भक्ति भाव भादो नदी, सबै चली उतराय ।
सरिता सोई सराहिये, जेष्ठ मास ठहराय ।
क्षमा खेत हल जोतिया, सुमिरण बीज जमाय ।
खण्ड ब्रह्माण्ड सूखा परे, भक्ति बीज नहीं जाय ।।

जैसे वर्षा ऋतु के भादो माह में सभी नदियों के जल में बाढ़ आ जाती है और वे उफन कर बहने लगती है, ऐसे ही देखा देखी तमाम लोग भक्ति भावना का प्रदर्शन करने लगते हैं, परन्तु उसी सरिता की सराहना होती है, जो ज्येष्ठ मास की भीषण गर्मी में भी नहीं सूखती। ऐसे ही जो सच्चे भक्त हैं, वे कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी कभी सद्गुरु की भक्ति नहीं छोड़ते।

जिस क्षमा रुपी खेत को भली-भाँति जोतकर, उसमें सद्गुरु के ध्यान का बीज बोया जाता है, वह चाहे पूरे ब्रह्माण्ड में सूखा पड़ जाये तो भी कभी नष्ट नहीं होता। सच्चा भक्त अपने हृदय की गहराई में भक्ति भावना का बीज बोता है, विपरीत परिस्थितियों में भी उसकी भक्ति भावना मिट नहीं सकती है।

यह विधि ब्रत करे जो प्रानी, जीव उबारत बार न आनी ।
ऐसे जीव मिले जो मोहीं, आवागमन रहित घर होहीं ।
धर्मदास जस बूझ्यो मोही, ब्रत प्रभाव कहेऊ मैं तोही ।

इस प्रकार अत्यंत भक्ति भावना के साथ जो प्राणी पूनोव्रत को धारण करता है, ऐसे प्राणी को भवसागर से पार उतरने में जरा भी देर नहीं लगती है। सद्गुरु कबीर साहब

तब पुत्र की माता उस स्त्री ने सब सखियों से यह बात कही कि भले ही यह देह अशुद्ध है, लेकिन मेरा हृदय पूरी तरह शुद्ध और पवित्र है। मेरे हृदय में सद्गुरु के लिये असीम प्रेम है, ऐसी दशा में मैं सद्गुरु का व्रत कैसे छोड़ दूँ ? देह की अशुद्ध दशा में यदि प्राण छूट जाये, तो हे सखियों ! यह जीव कहाँ जायेगा ? इसकी क्या गति होगी ? सद्गुरु का व्रत छोड़कर, मैं जीते जी चौरासी लाख योनियों में भटकती फिरुँ ? यह कैसी बात तुम सब कह रही हो ? यह सांसारिक जीव बहुत अधिक दुख पड़ने पर भी नहीं चेतता है। दुख पड़ने पर यदि प्राणी सद्गुरु का नाम हृदय से पुकारता है, तो उसके सभी दुख सद्गुरु की दया से निश्चित रुप से मिट जाते हैं। पुत्र का जन्म होने के कारण, सूतक अवस्था में भले ही देह अशुद्ध हो गयी हो, लेकिन मैं सद्गुरु के नाम का जाप हृदय से करूँगी ।

आज पूर्णिमा का व्रत मैं पूर्ण मन से धारण करूँगी। मैने पूर्णिमा का व्रत सदैव नियमपूर्वक धारण किया है, आज मैं सद्गुरु के प्रति अपने प्रेम को कैसे छोड़ दूँ ? पूर्णिमा को दिन में भोजन नहीं लिया जाता है, सत्यपुरुष का स्मरण पूर्ण हृदय से किया जाता है। जब दिन के चार प्रहर अर्थात १२ घण्टे बीत जाते हैं, तब सायंकाल ६ बजे के बाद पाँचवां प्रहर चन्द्र का शुरु होता है, तभी व्रत सम्पूर्ण होने के बाद मैं अन्न और जल ग्रहण करुँगी। मैं साहेब का नाम स्मरण करती रहूँगी, ऐसे ही खाली बैठकर मैं पूनोव्रत का त्याग नहीं करुँगी।

सद्गुरु कबीर साहेब कहते हैं कि इस प्रकार उस पतिव्रता नारी की सखियों से वार्ताकरते हुये सायंकाल हो गया और उस स्त्री का व्रत सम्पूर्ण हो गया। रात्रि के समय रसोई में घृत से विविध प्रकार के पकवान बनाकर तैयार किये गये। सद्गुरु की जिस पर दया दृष्टि हो जाती है, उसके समस्त दुख-दारिद्रय दूर हो जाते हैं। उसी समय उस स्त्री के घर पर दो सन्त पधारे, जिन्हें देखकर स्त्री बहुत प्रसन्न हुई। उन्हें प्रेमपूर्वक आसन पर बिठाकर, उनका चरणामृत लिया।

वह नवजात शिशु को छोड़कर, सन्तों के पास आई और पूर्ण भाव से उन्हें सम्मान दिया। स्त्री ने कहा कि आज मेरा व्रत सम्पूर्ण हुआ, क्योंकि मेरे घर पर दया करके सन्त पधारे हैं। सभी सन्त सेवक सती को भोजन पकवान प्रेमपूर्वक परोसा गया। जब दोनों सन्त आकर बैठे तो शंख, मृदंग आदि वाद्ययंत्र बजाये गये। संतों के सामने भोजन का थाल लगाया गया। समर्थ सद्गुरु को भोग लगाकर, संतों ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया। संतों

वे चौबीसों का मत है न्यारा, राधे ब्रत जन्मे संसारा ।
जो जासो जैसा फल चाहीं, सोई ब्रत करे मन माहीं ।
सुन धर्मनि यह अगम संदेशा, पूनो ब्रत सद्गुरू पद भेशा ।
और सुनो संसार सुभाऊ, दोनों दीन को भाव बताऊ ।
मुसलमान जो रोजा करे, सो तैसा फल वाको धरे ।
यह तो कर्मकांड व्यवहारा, पूनो भेद है इनसे न्यारा ।
सत्य ब्रत पुरूष अनुसारा, धर्मनि तुमसो कह्यो विचारा ।
पूनो ब्रत मूल ले राखा, और ब्रत सकल है शाखा ।
जा दिन उत्पति पुरूष अनुसारा, ता दिन पूनो को विस्तारा ।
सोरह अंश प्रगट जब कीन्हा, ब्रत उपासन पूनो दीन्हा ।

सद्गुरु कबीर साहब धर्मदास जी को आश्वासन देते हुये कहते हैं कि हे धर्मदास! इसके कारण के विषय में मैं तुम्हें बताता हूँ। अन्य सभी व्रत धारण करने में सरल और सुगम है, लेकिन वे सभी व्रत सत्यव्रत पूनोव्रत की तुलना में किंचित मात्र नहीं ठहरते हैं। पूनोव्रत सदा सुखदायी है, सत्यपुरुष की आराधना से यह व्रत परमपद मुक्ति प्रदान करने वाला हो गया है। देखा देखी अन्य व्रत तो सभी प्राणी रखते हैं, लेकिन वे पूनोव्रत के रहस्य को नहीं जानते हैं। लोग एकादशी का व्रत रखते हैं, माह में दो बार तथा वर्ष भर में चौबीस बार लोग पुण्य फलों की आशा में (स्वर्ग के सुख की प्राप्ति) एकादशी व्रत को धारण करते हैं। लेकिन उन्हें जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति नहीं मिलती है, मुक्ति पद को न पाने के कारण उन्हें बार-बार संसार में आना पड़ता है। इन चौबीसों व्रतों का मत अलग-अलग है, जिसको जैसा फल चाहिये, वह वही व्रत धारण करता है।

हे धर्मदास ! पूर्णिमा व्रत अगम अपार सद्गुरु का, पूर्ण पुरुष का व्रत है। मैं तुम्हें संसार के स्वभाव और हिन्दू-मुस्लिम दोनों धर्म के सम्बन्ध में भी बताता हूँ। मुसलमान रोजा रखते हैं और उसके अनुसार उसका फल पाते हैं। पूर्णिमा व्रत संसार के व्यावहारिक कर्मकाण्डों से अलग व्रत है। यह सत्यव्रत (पूनोव्रत) पूर्ण समर्थ सत्यपुरुष की भक्ति में लीन होने का व्रत है। इस बात को विचार कर देखो कि पूनोव्रत मूल सत्यपुरुष का व्रत है, किसी देवी-देवता का व्रत न होकर स्वयं पूर्ण परात्पर पारब्रह्म अविनाशी सत्यपुरुष की उपासना से सम्बन्धित व्रत है। अन्य सभी व्रत इसकी शाखायें हैं।

कहते हैं कि ऐसे सच्चे भक्त मुझे प्रिय हैं। उन्हें इस संसार के आवागमन से मुक्ति मिल जाती है, सत्यलोक की प्राप्ति हो जाती है। हे धर्मदास ! तुमने जो व्रत के प्रभाव के सम्बन्ध में जानना चाहा है, तो इस सत्यव्रत पूनो का प्रभाव अमिट है।

धर्मदास वचन

धर्मदास बूझे कर जोरी, समरथ सुनिये बिनती मोरी ।
तुम हो दयावंत प्रभु स्वामी, घट-घट के तुम अन्तरयामी ।
एक बात पूछन की आशा, ताका स्वामी करो प्रकाशा ।
और ब्रत सबहिं नर करहीं, पूनो ब्रत चित एक न धरहीं ।
सो कारन कौन है स्वामी, तुम अब कहो प्रभु अन्तरयामी ।
और ब्रत एकादशी करहीं, पूनो ब्रत चित एक न धरहीं ।
सो प्रभाव कहो गुरू पूरे, सदा रहौं मैं चरण हजूरे ।

धर्मदास जी साहब दोनों हाथ जोड़कर सद्गुरु कबीर साहब से विनती करते हैं कि हे स्वामी ! तुम दयालु हो, प्रत्येक घट के अन्तर की बात जानने वाले अन्तर्यामी पुरुष हो। मैं एक बात इस आशा के साथ पूछना चाहता हूँ कि आप उसके सम्बन्ध में मुझे बताने की कृपा करेंगे। संसार में अन्य अनेक व्रत लोग धारण करते हैं, लेकिन उनकी रुचि इस पूनोव्रत के सम्बन्ध में तनिक भी नहीं है। हे स्वामी ! इसका क्या कारण है ? एकादशी आदि अन्य व्रत लोग धारण करते हैं, लेकिन वे पूनोव्रत क्यों नहीं रखते हैं ? मैं आपके श्री चरणों की वन्दना करता हूँ। इस सम्बन्ध में मुझे बताने की दया करें।

सद्गुरू वचन

कहैं कबीर सुनो धर्मदासा, सकल भेद मैं करों प्रकाशा ।
और ब्रत सुगम है भाई, सत ब्रत को नाहिं तुलाई ।
पूनो ब्रत सदा सुखदाई, राधे ब्रत परम पद पाई ।
और ब्रत सब करे करावे, पूनो ब्रत का भेद न पावे ।
एकादशी ब्रत चित सो करही, चौबीस फल साल में परही ।

पूनो ब्रत करे लव लाई, ताको सतगुरू सदा सहाई ।
पूरण मासी सदा निवासी, अमर लोक से आई दासी ।
यहि ब्रत को साधौ भाई, यहि ब्रत मोहिं पुरूष लखाई ।
यही ब्रत सकलो सुख होई, यही ब्रत से लोक समोई ।
यही उपासन सन्तन सेवा, यही उपासन अपन वश देवा ।
पूनो ब्रत पुरूष को होई, अमरपुरी से आयो सोई ।
पुरूष जो मन में कीन्ह विचारा, पूनो ब्रत मुक्ति विस्तारा ।
पूनो महिमा सुने सुनावे, चौरासी में बहुरि न आवे ।
पूनो पाठ नित नेम जो करई, सो प्रानी भव सागर तरई ।
नित नेम जो बनि नहिं आवे, पूनो निश्चय पाठ करावे ।
नित नेम सुने चित लाई, ताको काल दगा मिट जाई ।
पुरूष सो उनकी रक्षा करे, जम के फन्द कबहूं नहिं परे ।
सबहिं देवता करई बड़ाई, धन्य वे हंसा परम पद पाई ।
धन्य प्रताप पूनो का साँचा, जाके बल जीव जम सो बांचा ।
ब्रह्मा बिष्णु महेश्वर गावे, धन वे हंसा लोक सिधावे ।
पूनो महात्मय कहँ लगि कहिये, श्रवण सुनत परम पद लहिये।
कहैं कबीर सुनों धर्मदासा, परम पद की राखो आशा ।
जो तुम पूछेऊ अगम संदेशा, सो मैं तोहि कहेऊं उपदेशा ।
धर्मदास यह वस्तु अपारा, पूनो ब्रत है गुप्त विचारा ।
मन बच कर्म हृदय जो धरई, सकल मनोरथ सतगुरू पुरई ।
जो कोई नारी होय बंझारा, पूनो ब्रत करे अनुसारा ।
ताके उदर बालक जो आई, धनि महिमा है सतगुरू सांई ।
गत संशय अजगैवी होई, सो यह ब्रत करे पुनि सोई ।
धारत ब्रत सकल मिट जाई, हृदय शुद्ध से ब्रत कराई ।

जो पूर्ण चित्त से पूनोव्रत को धारण करता है, उसके सभी भवबन्धन रुपी कर्म नष्ट हो जाते हैं। ऐसे हंस (जीव) को दुबारा भवसागर में नहीं आना पड़ता। उसे अनन्त सुख

इस सृष्टि की उत्पत्ति के पहले, जिस दिन सत्यपुरुष के मन में सृष्टि रचना का विचार उत्पन्न हुआ, उसी दिन से जीवों की मुक्ति के लिये उन्होने नित्य पूनोव्रत की उपासना का विधान भी बना दिया है। जिस दिन सत्यपुरुष के द्वारा इस सृष्टि की उत्पत्ति हुई, उसी दिन से पूर्णिमा व्रत की परम्परा चली आ रही है। सत्यपुरुष ने जब अपने सोलह अंशों (सुतों) को प्रगट किया तो उन्हें व्रत उपासना के लिये पूनो व्रत रखने को कहा।

पूनो महात्म्य प्रतीत करि, जो निज जाने कोय ।
भक्ति करे भर्में नहिं, ताहि मुक्ति फल होय ॥
मुक्ति भेद तुमसे कह्यो, दृढ़ कर राख शरीर ।
निर्भय होय निःशंक भजो, केवल नाम कबीर ॥

पूनो महात्म्य के सम्बन्ध में जिसे पूर्ण निश्चय है, जो मनसा वाचा कर्मणा व्रत को धारण करता है, जो बाह्य प्रपचों से ध्यान हटाकर सत्यपुरुष की भक्ति करता है, उसे निश्चित रुप से मुक्ति प्राप्त होती है। सद्गुरु कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास ! मैं तुम्हें मुक्तिपद प्राप्त करने का रहस्य बताता हूँ कि तुम दृढ़ निश्चय के साथ, अपने तन मन को सद्गुरु के चरणों में सौंपकर, निर्भय होकर बिना किसी भ्रम के सत्यपुरुष के नाम का स्मरण करो।

पूनो ब्रत करे चितलाई, ताकर सकल कर्म मिट जाई ।
बहुरि न हंसा भवजल आई, सुख सागर में जाय समाई ।
ऐंठ झूठ सो रहे निनारा, कहैं कबीर सो हंस हामारा ।
साँचा बचन बोले मृदुबानी, सो जीव निश्चय लोक समानी ।
मेरो पंथ खांड़े की धारा, जो गहै सो उतरे पारा ।
सुमरण चौका जोत निवासा, तबही दीपक आनि प्रकाशा ।
सत्यलोक में कीन्हो वासा, जगमग जोत रोम ऊजासा ।
अजर वस्तु का जाने भेदा, कहैं कबीर सो हंस अछेदा ।
उत्तम सदन पुहुप की माला, बंदनवार रचि धर्मशाला ।
ब्रती होय स्त्री ना परसे, ताको काल कबहु ना दरसे ।
पूनो के दिन नेम अचारा, बहुत भांति सो रहे निनारा ।

पूनोव्रत नित्य नियमपूर्वक धारण करना चाहिये। यदि ऐसा संभव न हो तो पूर्णिमा के दिन अवश्य पूनो व्रत को धारण कर, सत्यव्रत कथा का पठन पाठन करना चाहिये। नित्य नियमपूर्वक व्रत कथा के सुनने से जीव यम के यातना फंदे से बचा रहता है। सत्यपुरुष ऐसे हंस (जीव) की स्वयं रक्षा करते हैं और वह प्राणी यमराज के फन्दे में कभी नहीं पड़ता है। ऐसे प्राणी की सभी देवता स्वयं प्रशंसा करते हैं और उस भाग्यशाली प्राणी का जीवन परमपद को पाकर धन्य हो जाता है। सत्यव्रत पूर्णिमा के प्रभाव से प्राणी, यमराज के जाल से बच जाता है। ऐसे हंस (जीव) की ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी बड़ाई करते हैं। वे प्राणी धन्य है, जो व्रत के प्रभाव से, सत्यपुरुष के लोक सत्यलोक को जाते हैं।

पूनों की महिमा का शब्दों के द्वारा बखान नहीं किया जा सकता है। सद्गुरु कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास ! पूनोव्रत कथा के श्रवण से प्राणी को निश्चित रूप से परमपद की प्राप्ति होती है। हे धर्मदास ! तुमने जिस अगम अथाह रहस्य के सम्बन्ध में पूछा है, उसके विषय में यह रहस्य भली-भाँति समझ लो कि सत्यव्रत पूर्णिमा की महिमा अगम है, अपार है। मनसा, वाचा, कर्मणा, पूर्ण निष्ठा के साथ इस व्रत को धारण करने वाले प्राणी की सभी मनोकामनायें, सद्गुरु अवश्य पूर्ण करते हैं। पूनो व्रत के प्रभाव से बाँझ स्त्री को भी संतान प्राप्ति हो जाती है। शुद्ध हृदय, निर्मल मन से, नियमपूर्वक, जो प्राणी पूनोव्रत को धारण करता है, उसके सभी संदेह, भ्रम सद्गुरु की दया से ऐसे नष्ट हो जाते हैं, कि फिर दुबारा दृष्टि में नहीं आते।

धर्मदास वचन

धर्मदास चरनन उठि परिया, शीश नवाय चरण तर धरिया।
धन सतगुरू धन ब्रत तुम्हारा, तुम्हरी दया सों जीव उबारा।
हे स्वामी एक पूछो तोहीं, ब्रत प्रभाव कहो गुरू मोहीं।
पूनो ब्रत जब चलि आवै, युग युग बंध सो ब्रत रहावै।
कै प्रभु एक ब्रत पुनि कीजै, एक ब्रत दोनों फल लीजै।
सो निर्णय मोहि कहो बुझाई, नारी पुरूष को मता सुनाई।

धर्मदास जी साहब ससम्मान सद्गुरु कबीर साहब के श्री चरणों में, शीश झुकाकर

सागर की प्राप्ति हो जाती है। सद्गुरु कबीर साहब कहते हैं कि जो प्राणी मिथ्या अभिमान और असत्य से दूर रहता है, वही हंस (जीव) हमारा सच्चा भक्त है। जो सदैव सत्य और मधुर वचन बोलता है, वह जीव निश्चित रुप से सत्यलोक की प्राप्ति करता है। मेरा पथ तलवार की धार के समान है। इस पर चलना तलवार की धार पर चलने के बराबर है, लेकिन जो प्राणी दृढ़तापूर्वक इस पर चलता है, वह निश्चय ही भवसागर के पार उतर जाता है।

जो प्राणी सत्यपुरुष के नाम का स्मरण, चौका आरती, दीपक जलाकर करता है, उसका हृदय सत्यपुरुष के प्रकाश से प्रकाशित हो जाता है। वह सत्यलोक की प्राप्ति का अधिकारी बनकर, सत्यलोक में वास करता है। उसके रोम-रोम से प्रकाश प्रवाहित होता है। सदा एकरस रहने वाले अक्षय परमतत्व का ज्ञाता बनकर, वह हंस जीव स्वयं अभेद्य अविनाशी हो जाता है। पूनो के दिन घर को साफ स्वच्छ बनाकर, बन्दनवार बनाकर, फूलों की माला से सुसज्जित करना चाहिये। बाह्य शुद्धि के साथ आन्तरिक शुद्धि, पवित्रता पर विशेष ध्यान देना चाहिये। जो साधक संयम के साथ रहकर, स्त्री संसर्ग से दूर रहता है, उसे काल यमराज भी स्पर्श करने का साहस नहीं करते हैं।

पूर्णिमा के दिन अपने मन और इन्द्रियों को काबू में रखकर, संयम नियमपूर्वक व्रत का पालन करना चाहिये। जो संयमी पुरुष अपने अन्तःकरण को शुद्ध बनाकर, निर्मल मन से, पूर्ण निष्ठा व लगन के साथ, पूनोव्रत की साधना करता है, उसकी सद्गुरु सदैव सहायता करते हैं। पूर्णिमा में सत्यपुरुष का सदा एकरस नित्य निवास है, इसका आगमन सत्यपुरुष के निवास अमरलोक से हुआ है। पूनोव्रत की साधना के लिये मुझे स्वयं सत्यपुरुष ने कहा है।

हे धर्मदास ! इस पावन पूनोव्रत की साधना तुम भी स्वयं अपने जीवन में करो। इस पावन पूनोव्रत को धारण करने से सभी लौकिक सुखों की प्राप्ति तो होती ही है, अन्त में सत्यलोक की भी प्राप्ति होती है। पूनोव्रत में संतों की सेवा करनी चाहिये सत्यपुरुष की प्राप्ति के लिये अपने मन को सत्यपुरुष की उपासना में लगाना चाहिये। पूनोव्रत सत्यपुरुष का व्रत है और उनके निवास अमरलोक से आया है। सत्यपुरुष ने जगत की मुक्ति के लिये इस पूनोव्रत का विधान प्रतिपादित किया है। पूनो महात्म्य को सुनने और सुनाने से, प्राणी चौरासी के भवबंधन में दुबारा नहीं पड़ता है। वह भवसागर के पार उतर जाता है।

धर्मदास यह बूझो बानी, सत्यलोक की कही निशानी ।
मन बच कर्म ब्रत जो धरई, ताकी महिमा कहँ लग कहई ।
सो प्राणी बड़ भागी होई, सातो पुरूखा तारे सोई ।
जा घर भक्त लेय अवतारा, अगले पिछ्ले सबै उबारा ।
धन्य भाग जीवन का होई, जा घर भक्त प्रगट पुनि सोई ।

सद्गुरु कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास ! नारी-पुरुष के सम्बन्ध में तुम्हारे प्रश्न के समाधान हेतु मैं तुम्हें नारी पुरुष का इतिहास सुनाता हूँ। यज्ञ स्थल में पुरुष के बाँये स्थान पर बैठने वाली स्त्री को बामांगी कहा जाता है। हे धर्मदास ! तुम ध्यान देकर सुनो, इसका रहस्य मैं तुम्हें समझाता हूँ। वेद, शास्त्र, पुराण के अनुसार नारी-पुरुष दोनों एक ही शरीर के दो हिस्से हैं। पुरुष के शरीर का आधा भाग नारी के शरीर में और नारी के शरीर का आधा भाग पुरुष के शरीर में समाहित है। इसलिये स्त्री को पुरुष की अर्धांगिनी कहा जाता है। अतः पुरुष के द्वारा सत्यव्रत की आराधना से उसे जो फल मिलता है, वही फल नारी को भी मिल जाता है, इसी प्रकार नारी के द्वारा सत्यव्रत को धारण करने से जो पुण्य फल उसे मिलता है, वही पुण्य फल पुरुष को भी मिल जाता है। अतः स्त्री-पुरुष दोनों को पूनोव्रत धारण करना चाहिये तथा सत्यवचन बोलना चाहिये । उसी सुहागिन स्त्री को अर्धांगिनी कहा जाता है, जो पति के प्रत्येक वचन को हृदय में धारण करती है, अपने पति की किसी आज्ञा का कभी उल्लंघन नहीं करती है।

हे धर्मदास ! गृहस्थ नारी-पुरुष के आचरण के सम्बन्ध में मैं तुम्हें बताता हूँ। पति-पत्नी को सत्यपुरुष के नाम का सदैव ध्यान करना चाहिये। यदि कोई भूखा-प्यासा प्राणी घर के द्वार पर आ जाये, तो उससे बड़े प्रेम से मिलना चाहिये। सद्गुरु का सच्चा भक्त वही है, जिसके हृदय में दया, धर्म विद्यमान है। एक सद्गृहस्थ व्यक्ति को यह सदैव स्मरण रखना चाहिये कि जैसी पीड़ा की अनुभूति उसे अपने शरीर में, अपने दुख दर्द में होती है, वैसी ही पीड़ा की अनुभूति इस संसार के अन्य प्राणियों के दुख दर्द को देखकर उसे होनी चाहिये। हे धर्मदास ! सद्गृहस्थ लोगों को संतों, साधुओं का सदैव सम्मान करना चाहिये। इस प्रकार सच्चे धर्म का पालन करने वाले प्राणी को सत्यलोक की प्राप्ति होती है । मनसा, वाचा, कर्मणा सत्यव्रत को धारण करने वाले प्राणी की महिमा का वर्णन, शब्दों में करना सम्भव नहीं है। ऐसा भाग्यशाली प्राणी जिस कुल में जन्म लेता है,

विनयपूर्वक कहते हैं कि हे सद्गुरु ! आप धन्य है, आपका यह सत्यव्रत भी धन्य है, जिसके द्वारा आपकी दया से जीवों का उद्धार होता है।

हे सद्गुरु ! आपने व्रत के प्रभाव के बारे में मुझे बताया, लेकिन एक प्रश्न मैं पूछना चाहता हूँ कि पूर्णिमा के दिन स्त्री-पुरुष का युग्म या जोड़ा, यदि व्रत रखता है तो क्या किसी एक के व्रत धारण करने से दोनों को फल मिलता है ? नारी-पुरुष के सम्बन्ध में मुझे अपने निर्णायक वचन तथा नारी-पुरुष का इतिहास सुनाने की दया करें।

सतगुरू वचन

धर्मदास यह बूझो भाऊ, नारी पुरूष इतिहास सुनाऊं ।
जग कारण नारी पुनि होई, सो बामांगी बोलै सोई ।
ताकर भेद अब कहौं बुझाई, धर्मदास सुनियो चित लाई ।
नारी पुरूष एक अंग जाना, श्रुति पुराण सो करे बखाना ।
पुरूष अंग जो आधा होई, नारी अंग में बेधा सोई ।
नारी अंग आधा जो कहिए, सोई अंग पुरूष में लहिए ।
सो अर्द्धंगी पुरूष की होई, दोनों मता एक पुनि सोई ।
पुरूष ब्रत जो राधे भाई, सोई फल नारी जो पाई ।
नारी ब्रत करे अनुसारा, सोई पुण्य पुरूष में धारा ।
दोनों ब्रत रहे जो प्राणी, सत्य वचन मुख बोलै बानी ।
सो अर्द्धंगी नाम सोहारा, पुरूष वचन हृदय में धारा ।
सो पतिब्रता बोलै सोई, पिया वचन टारे नहिं कोई ।
धर्मदास यह भेद बतावा, नारी पुरूष भाव सुनावा ।
निसि दिन रहै नाम लौलीना, भूखा प्यासा आतम चीन्हा ।
जो द्वारे पर आवे कोई, बहुत दीन सो मिलिये सोई ।
सतगुरू भक्ति यही परमाना, दया दीन घट मांही समाना ।
जैसे पीर अपन अंग जाना, तैसे सकल जीव मैं माना ।
धर्मदास यह गेही भाऊ, संत साधु का आदर लाऊ ।

कहरा

पूरणमासी सदा निवासी सत्यलोक से आई है ।
पूनो का ब्रत करो, घट में दिल से सांच धरो ।
दुविधा दुर्मत दूर करो, बंदिछोर बताई है ॥१॥
और ब्रत है आता जाता, पूनो ब्रत मुक्ति का दाता ।
जानेगा कोई संत सुजाना, संकट मांही सहाई है ॥२॥
चौका चार अरु पान मिठाई, अगर अबीर सुगन्ध उड़ाई ।
सत्तनाम की फिरी दुहाई, सब संतन के मन भाई है ॥३॥
जीव के साटे नरियर दीन्हा, जीव छुड़ाय काल सो लीन्हा ।
बन्दीछोर पार कर दीन्हा, सत्य कबीर सहाई है ॥४॥

पूर्णिमा में सत्यपुरुष का सदा एकरस निवास है, सत्यपुरुष के सत्यलोक से इस व्रत का धरती पर अवतरण हुआ है। बंदीछोर सद्गुरु कबीर साहब ने कहा है कि अपने मन की समस्त दुविधा और दुष्प्रवृत्ति को त्याग कर, हृदय से सत्य को ग्रहण करना चाहिये। इस प्रकार पूरी निष्ठा के साथ समस्त प्राणियों को पूनो व्रत को धारण करना चाहिये। अन्य व्रतों की साधना करने पर अर्जित पुण्यफल को भोग लेने के पश्चात् संसार में पुनः जन्म लेना पड़ता है, सांसारिक आवागमन के चक्कर से मुक्ति नहीं मिलती है।

पूनोव्रत मुक्ति प्रदान करने वाला सत्यव्रत है। पूनोव्रत मनुष्य के संकट को दूर करने वाला व्रत है, इसका अनुभव व्रत धारण करने वाला साधक सहज ही कर सकता है। चौका चार अर्थात चार प्रकार के चौकों (सहज आनन्दी चौका, चलावा चौका, एकोत्तरी चौका, सोरह सुत का चौका) का प्राविधान सद्गुरु कबीर साहब ने, जीवों के कल्याण के लिये किया है। यह चौका आरती (सात्विक यज्ञ) मानव के द्वारा की गयी भूल-चूक दोषों के निवारण हेतु, गृह शुद्धि, आत्म शुद्धि, पूर्वजों के उद्धार, संतान की प्राप्ति के लिये किया जाता है।

प्रथम दो चौके (आनन्दी एवं चलावा चौका) वंशगद्दी के कड़िहार महन्तों के

उस कुल की सात पीढ़ियाँ तर जाती हैं। यह सत्य है कि जिस घर में सद्गुरु के सच्चे भक्त का अवतरण होता है, उस घर की पिछली और आगे आने वाली सभी पीढ़ियों का उद्धार हो जाता है। जिस घर में सद्गुरु का हंस, एक सच्चा भक्त प्रकट होता है, उस घर के सभी प्राणी बड़े भाग्यशाली होते हैं, उनका जीवन धन्य हो जाता है।

प्रथम मन्दिर झराय के, चौका डार पुताय ।
पान प्रसाद बनाय के, साहेब को भोग लगाय ॥
ब्रत रहो चितलाय के, सन्त को लेय प्रसाद ।
कहैं कबीर धर्मदास से, तरे सहित औलाद ॥

पूनोव्रत की साधना करने वाले व्यक्तियों को चाहिए कि वे सर्वप्रथम अपने घर और मंदिर को साफ, स्वच्छ करके चौके को शुद्ध जल से पोतकर स्वच्छ कर लें। इसके पश्चात् पान प्रसाद तैयार करके, साहेब को भोग लगायें। सद्गुरु कबीर साहब धर्मदास जी साहब से कहते हैं कि जो प्राणी मन लगाकर, पूर्णनिष्ठा के साथ पूर्णिमा व्रत को धारण करता है और सद्गुरु के संत द्वारा दिये गये प्रसाद को ग्रहण करता है, वह अपने पूरे कुटुम्ब सहित भवसागर से पार उतर जाता है।

॥ इति श्री बृहत पूनो महात्तम ग्रन्थ समाप्तम् ॥

●●

आरती कर पुनि नरियर तहां मोराइए ।।
पुरूष को भोग लगाय सखा मिल पाइए ।
पाय प्रसाद अघाय चरण चित लाइए ।।
जुगन जुगन की क्षुधा सो तुरन्त बुझाइए ।
अति अधीन हो प्रेम सो गुरू ही रिझाइये ।।
कहैं कबीर सत भाव सो लोक सिधाइए ।
जनम मरण मिट जाय, बहुरि नहीं आइए ।।

आज पूर्णमासी के दिन मंगल गीत गाकर, सद्गुरु कबीर साहब के श्री चरणों की पूजा करके, उनकी दया दृष्टि से परमपद (मुक्ति पद) पाने का शुभ अवसर मिला है। पूर्णिमा व्रत के साधक को चाहिये कि वह सर्वप्रथम घर के भीतर या किसी पवित्र स्थान पर आनन्दी चौका के लिये चौका स्थल को साफ स्वच्छ करके, श्वेत मृत्तिका शुद्ध जल में घोलकर चार हाथ लम्बा चौड़ा चौका पोतकर, १२ अंगुल चंदन का चौका पोते और उसमें घिसा हुआ चंदन छिड़क दे।

नया श्वेत वस्त्र लाकर सात हाथ लम्बा और दो-तीन हाथ चौड़ा चंदोवा तानना चाहिये। गजमुक्ता से चौक पूरित करे, अष्ट मेवा, मिष्ठान, पान सुपारी, नारियर आदि सर्व सामग्री एकत्रित कर ले। गाय के घृत से बने पकवान को थाल में रखकर, धोती से ढँक दें। कलश में जल भरकर, पाँच आम के पत्ते बाहर की ओर नोक करके लगायें, उसके ऊपर पाँच बाती का दीपक, गाय के शुद्ध घी में जलाकर रख दें। चौके में गुरु का आसन लगाकर, गुरु की पधरावनी करायें, गद्दी पर विराजमान होने के बाद गुरु का चरणामृत लें। उपस्थित साधु, सन्त, सेवक, सती बारी-बारी से गुरु को नारियर, पान सुपारी अर्पण करते हुये बंदगी करें, सभी उपस्थित लोग मिलकर आरती शब्द गाते हुये आरती उतारें।

गुरु जी की आरती के बाद, नारियल मुरावें। सत्यपुरुष को भोग लग जाने के बाद चौका कराने वाले व्यक्ति, परिवार सहित, बारी-बारी से, गुरुजी से पान-परवाना ग्रहण करें तथा उपस्थित संत, साधु, सेवक, सती सभी क्रम से बारी-बारी पान प्रसाद लेवें। सत्यपुरुष के प्रसाद को पाकर, मानव की युगों-युगों की प्यास बुझ जाती है। सद्गुरु के चरणों में चित्त लगाकर, प्रेम के साथ प्रसाद ग्रहण करने पर, मन तृप्त हो जाता है।

सद्गुरु कबीर साहब कहते हैं कि जो प्राणी सच्चे हृदय से, पूर्णनिष्ठा के साथ सद्गुरु की भक्ति उपासना करता है, उसे सत्यलोक की प्राप्ति होती है। उसके जन्म-मरण का चक्र मिट जाता है, मुक्ति पद प्राप्त करने के कारण उसे फिर संसार में लौटकर आना नहीं पड़ता है।

द्वारा तथा अंतिम दो चौके (एकोत्तरी चौका, सोरह सुत का चौका) केवल वंशगुरु के द्वारा किये जाते हैं। मानव को प्रत्येक ६ माह या साल भर में एक बार चौका आरती, गुरु दर्शन, गुरु भक्ति की दृढ़ता के लिये एवं आत्म शुद्धि के लिये अवश्य कराना चाहिये। सहज आनन्दी चौका लौकिक कामनाओं की पूर्ति हेतु और आनन्द मंगल के अवसर पर कराया जाता है।

चौका इस भौतिक संसार में सत्यलोक का प्रतीक है। सत्यपुरुष के निवास सत्यलोक की प्राप्ति हेतु चौका कराया जाता है। चौका स्थल में अगर, अबीर, इत्र आदि सुगंधित पदार्थों की सुवास से, चैतन्य गुरुदेव के द्वारा पान प्रसाद को पाकर तथा सत्यनाम की धुन से सभी सन्तों का हृदय आनन्द से भर जाता है। चौके में जीव के बदले नारियर सद्गुरु को अर्पण करने से, प्राणी काल निरंजन, माया के फन्दे से छूट जाता है। बन्दीछोर सद्गुरु कबीर साहब की महिमा अपरम्पार है, जो जीव को काल के फन्दे से छुड़ाकर, भवसागर के पार उतार देते हैं।

मंगल

पूरनमासी आज तो मंगल गाइए ।
सतगुरू चरण मनाय परम पद पाइए ।।
प्रथमे मंदिर झार तो चन्दन पुताइए ।
नूतन वस्त्र आन चंदेवा तनाइये ।।
गज मोतियन का चौक तहां पुराइए ।
मेवा और मिष्ठान बहुत विधि लाइए ।।
पान सुपारी नरियर तहां चढ़ाइए ।
गऊ घृत पकवान सो धोती उढ़ाइए ।।
पल्लो सहित जो कलश तहां धराइए ।
पांच बाती के दीपक तहां बराइए ।।
गुरू के हेत सो आसन तहां बिछाइए ।
गुरू के चरन पखार तहां बैठाइए ।।
साधु संत संग लाय तो आरती उतारिए ।

॥ सत्यनाम ॥

अथ लघु पूनो महात्तम प्रारम्भ

धर्मदास बचन

युगल पाणि तब जोरि कर, धर्मनि बिनती कीन्ह ।
पूनो ब्रत महातम कहो, साधन सहित प्रवीन ॥

धर्मदास जी दोनों हाथ जोड़कर सद्गुरु कबीर साहब से विनती करते हुये कहते हैं कि हे सद्गुरु ! पूनो व्रत की महिमा साधन सहित बताने की दया करें।

धर्मदास विनवे कर जोरी, अहो साहेब एक बिनती मोरी ।
पूनो ब्रत महातम गावो, भिन्न भिन्न मोहि बरनि सुनाओ ।

धर्मदास जी सद्गुरु कबीर साहेब से हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हैं कि हे सद्गुरु ! पूनो व्रत की महिमा के सम्बन्ध में मुझे बतायें।

सतगुरू वचन

अहो धर्मनि तुम भली विचारी, पूछी कथा सबन हितकारी ।
अब सुन ब्रत महातम सारा, सुनि तरहिं जीव करहिं बिचारा ।
आदि पूनो पुरूष निवासा, सुरति नाम अमी अंक प्रकाशा ।
तुम सो कहों सुनहु धर्मदासा, आदि पूनो करो प्रकाशा ।
पूनो ब्रत पुरूष मोहि दीन्हा, तीन अंक जोर मैं लीन्हा ।
पूनो ब्रत सुरत से होई, सुरत नाम निह अक्षर समोई ।
पूनो कथा मैं कहौं सुनाई, जासो सकल पाप क्षय जाई ।
निरगुण ब्रह्म सगुण औतारा, जासे जीव होय निस्तारा ।
पूनो ब्रत करे जो कोई, ताको आवागमन न होई ।
काम क्रोध मद लोभ भुलावे, निन्दा ईर्षा, दूर बहावे ।
भर्म कर्म पर आस बिसारे, सतगुरू चरण कमल चित धारे ।
सत्त शब्द में रहे समाई, बहुरि न योनि संकट आई ।

सद्गुरु कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास ! तुमने बहुत अच्छा किया जो सबका कल्याण करने वाले पूनोव्रत के सम्बन्ध में पूछा है। अतः अब मैं तुम्हें पूनो व्रत की महिमा के विषय में सुनाता हूँ, जिसे सुनकर जीवों को मुक्ति प्राप्ति होती है। आदि पूनो अर्थात् सृष्टि की आदि में जब सत्यपुरुष स्वयं अकेले विराजमान थे, तो जिस दिन सत्यपुरुष ने सृष्टि रचना का विस्तार किया, उसी दिन सत्यपुरुष ने पूनोव्रत का भी विस्तार, जीवों की मुक्ति के लिये किया। पूनो में सत्यपुरुष का सदा एकरस निवास है। जिस सत्यानुरागी हंस (जीव) की सुरति सत्यपुरुष के निःअक्षर सत्यनाम से जुड़ जाती है, उसके हृदय में अमृत परमतत्व का प्रकाश फैल जाता है।

हे धर्मदास ! ध्यान से सुनो, मैं उस आदि पूनो के सम्बन्ध में तुम्हें बताता हूँ। स्वयं सत्यपुरुष ने मुझे पूनोव्रत धारण करने के लिये कहा है। मैंने तीनों लोकों को इस व्रत से जोड़ दिया, ताकि तीनों लोकों के सभी जीवों का उद्धार हो सके। पूनोव्रत की साधना सुरति से की जाती है। सत्य व्रतधारी साधक की सुरति सत्यपुरुष के निःअक्षर सत्यनाम में लगी रहती है, सदैव लीन रहती है, समाहित रहती है। मैं पूनोव्रत की कथा सुनाता हूँ, जिसके श्रवण से मनुष्य के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। निर्गुण निराकार परब्रह्म सत्यपुरुष को जीवों के उद्धार हेतु, सगुण साकार रूप में अवतरित होना पड़ता है।

जो प्राणी पूनोव्रत की साधना करता है, उसका आवागमन नहीं होता है। पूनोव्रत के दिन जो प्राणी काम, क्रोध, मद, लोभ को भुलाकर, परनिन्दा, ईर्ष्या आदि दुर्गुणों से दूर रहता है तथा मिथ्या भ्रम, भवबन्धनकारी कर्म, किसी का उपहास करने आदि अवगुणों से अपने चित्त को हटाकर, जो प्राणी सद्गुरु के चरण कमल को अपने हृदय में धारण करता है तथा जिसकी सद्गुरु कबीर साहब के सत्य वचनों में दृढ़ आस्था है, उसे गर्भवास में बार-बार आने का कष्ट नहीं भोगना पड़ता है।

धर्मदास वचन

धर्मदास विनवें कर जोरी, साहेब सुनिए विनती मोरी ।
पूनो कथा कहौं समुझाई, मोर जीव की संशय जाई ।

चार पहर जागरन करीजे, घर में बैठ कबहूं न रहीजै ।
चार पहर जो बनि नहिं आवै, तो अर्ध रात्रि जागरन करावे ।
आधा मांहि पहर बताऊं, पहर मांहि तो घड़ी ठहराऊं ।
क्षण मात्र जो जागरण करावे, ताका पाप भसम हो जावे ।
होमे अगिन काष्ठ की नाई, सकल पाप तुरते मिटि जाई ।
पूनो ब्रत जागरन नहिं करहीं, ब्रत सम्पूरण ना अनुसरहीं ।

सद्गुरु कबीर साहेब कहते हैं कि हे धर्मदास ! सुनो, मैं तुम्हें पूनोव्रत की महिमा के सम्बन्ध में बताता हूँ । करोड़ों अश्वमेध यज्ञ, करोड़ों तीर्थों का भ्रमण, पूरी पृथ्वी की परिक्रमा करने पर जो पुण्य फल मिलता है, वह सब पुण्यफल केवल एक बार पूर्णिमा व्रत धारण करने पर ही मिल जाता है । पूनोव्रत धारण करने वाले प्राणी के समस्त भवबन्धन कट जाते हैं । उसके हृदय में सत्यपुरुष की भक्ति भावना जाग उठती है । उसको जीवन में चारों पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) की प्राप्ति हो जाती है ।

जो प्राणी वाह्य प्रपंचों से मन को हटाकर, सत्यपुरुष की भक्ति भावना से रात्रि को जागरण करता है, नृत्य, गीत, वाद्ययंत्रों के द्वारा सत्यपुरुष की विविध प्रकार से स्तुति भजन करता है । जो रात में जागकर पूर्ण निष्ठा विश्वास के साथ अपनी सुरति को सत्यपुरुष के ध्यान में अतिशय प्रेम और लगन के साथ लगता है, उसे सत्यपुरुष के सत्यलोक की प्राप्ति होती है । पूर्णिमा में प्रातः उठकर स्नान करके, पूरे परिवार सहित सबको स्वच्छ, श्वेत वस्त्र धारण करना चाहिये । इस दिन संयम, नियम का पालन करते हुये निष्कपट होकर रहें, किसी को कटुवचन नहीं कहना चाहिये । साहेब के सत्यनाम का उच्चारण करना चाहिये ।

सभी प्राणियों के हृदय में सत्यपुरुष का वास है । जो प्राणी अपने भीतर सत्यपुरुष की अनुभूति करके, अपने निज स्वरुप, सत्यपुरुष के सत्यनाम का स्मरण, जागृत होकर, यदि एक बार भी कर लेता है तो सद्गुरु कबीर साहेब कहते हैं कि उसे यमराज के फन्दे से छुटकारा मिल जाता है । पूर्णिमा व्रत में संध्या जागरण करते हुये पान-प्रसाद सत्यपुरुष साहेब के चरणों में अर्पित करना चाहिये । यदि कोई रोगी, दुर्बल या शक्तिहीन हो तो पान-प्रसाद किसी भक्त के द्वारा सद्गुरु के चरणों में अर्पित करना चाहिये ।

धर्मदास जी साहब दोनों हाथ जोड़कर सद्गुरु कबीर साहब से विनती करते हैं कि हे साहब ! मुझे पूनोव्रत कथा के सम्बन्ध में समझाकर बतायें, जिससे मेरे मन के सभी सन्देह समाप्त हो जायें ।

सतगुरू वचन

कहैं कबीर सुनो धर्मदासा, पूनो महातम करों प्रकाशा ।
कोटि अश्वमेध करे जो कोई, कोटिन तीरथ भरमे सोई ।
सकल पृथ्वी फिरे फल जोई, सो इक पूनो किए फल होई ।
बन्धन कटे भक्ति उर छाई, धर्म अर्थ अरू मुक्ति पाई ।
रात्रि जागरन करो मन लाई, नृत्य गीत बाजिन्त्र बजाई ।
बहुत स्तुति सो जाग्रन कराई, सत्यलोक में जाय समाई ।
जागरण करे प्रेम लौलावै, सुरति निरत सो ध्यान लगावै ।
पूनो प्रातः स्नान कराई, उज्ज्वल सबै वस्त्र पहिराई ।
कूर कपट भाखे नहिं भाई, सत्य साहेब की आवाज कराई ।
एक बार सुमिरे निज नामा, कहहिं कबीर नहिं यम से कामा ।
संझा जागरण को चलि आई, पान प्रसाद साहब को चढ़ाई ।
जो जावन की शक्ति न होई, तो पान प्रसाद भेजहूं सोई ।
सो सतगुरू अर्पण कर लेहीं, दया माँग पुनि आपहि लेहीं ।
दिन भोजन नहिं कीजै भाई, रात्रि भोजन का भोग लगाई ।
उज्ज्वल तन्दुल दूध में धरीये, खीर खांड़ का भोजन करीये ।
पीछे साहेब का भोग लगाई, घृत दीप निज हाथ कराई ।
सूर्य लगन में भोजन कीजे, चन्द्र लगन में ध्यान धरीजे ।
चौदस लगन पूनों सुखदाई, परिवा लगन करो मत भाई ।
घड़ी बत्तीस के चालीस लेई, परिवा घड़ी न आवन देई ।
पूनो मांहि पारने कीजे, परिवा वेध कदे ना लीजे ।
पूनो थोड़ी घड़ी रहाई, तबै चौदस में ब्रत कराई ।

धर्मदास वचन

जागरन कहो कौन को कहीये, ताको भेद सकल सुनि लहीये।

धनी धर्मदास साहब सद्गुरु कबीर साहब से विनयपूर्वक कहते हैं कि हे सद्गुरु ! जागरण क्या है ? इसके बारे में मुझे बताने की दया करें।

सतगुरू वचन

सुरत रहे साहब के माहीं, भजन करे मन भटके नाहीं ।
सोई जागरन सत्य है भाई, बिनु जागरण कहु गति नहिं पाई ।
ताते सकल कथा सुनि लीजे, श्रद्धा करके जागरन कीजे ।
इक फिर सुन जागरन की टीका, वह जागरन होय न नीका ।
सारी रात नींद नहिं आवे, गान गीत महं चित्त लगावे ।
निन्दा करे झूठ लबराई, सो जागरन नहिं कहिए भाई ।
ताते गुरू गम हृदये धरो, जागरन बनि आवे सोई करो ।
बाल वृद्ध रोगी नर नारी, पहर घड़ी क्षण संग पियारी ।
श्रद्धा हीन रहे नर सूता, ताकहं विघ्न करै यमदूता ।
जागरन करे प्रेम लव लावे, अमर होय सतलोक सिधावे ।
पूनो प्रातः स्नान कराई, साधु संत में रुचि उपजाई ।
संतन को चरणामृत लेई, ताको सतगुरू बहु सुख देई ।
साधु अतीत द्वार कोई आवे, प्रेम सहित जल अन्न करावे ।
शक्ति होय सोई भोजन दीजे, संत जिमाय प्रेम फल लीजे ।
षट दर्शन अभ्यागत कोई, द्वार आय विमुख नहिं होई ।
ऐसे पूनो ब्रत करु निशंका, सबही सुनो राव अरू रंका ।
पूनो कथा जो सुने सुनावे, आप तरे औरन को तरावे ।
उच्छिष्ट भोजन करो ना भाई, पर घर भोजन करन न जाई ।
गुरू सेवा करे सांच ही बोले, पूनों ब्रत कबहूं नहिं डोले ।

सद्गुरु दयालु हैं, दया करके उसे भी पुण्यफल प्रदान करते हैं। पूनोव्रत के दिन, दिन में भोजन नहीं करना चाहिये। रात्रि में सत्यपुरुष को भोग लगाकर ही ग्रहण करना चाहिये। साफ स्वच्छ चावल को दूध में मिलाकर खीर बनाना चाहिये, भोजन में खीर, खांड़, घृत का बना पकवान, मिष्ठान प्रयोग करना चाहिये। सत्यपुरुष साहेब की आरती शुद्ध घृत से दीपक जलाकर करें तथा साहेब को भोग लगाने के बाद ही, भोजन प्रसाद ग्रहण करें। सूर्य लग्न में भोजन और चन्द्र लग्न में सत्यपुरुष का ध्यान करना चाहिये। स्वरोदय शास्त्र के अनुसार प्रत्येक स्वर के साथ तत्वों और वारों का प्रगाढ़ संबंध है। सूर्य लग्न में भोजन करना चाहिये। जैमुनि सूर्य की उत्तम लग्न है, जगपति मध्यम लग्न है।

स्वरोदय शास्त्र के अनुसार स्थिर, शान्त, सौम्य सभी मंगल कार्य जैसे गुरु दर्शन मंत्र सिद्धि, पूजा आदि चन्द्र लग्न में करना चाहिए। अतः सत्यपुरुष का ध्यान चन्द्र लग्न में करना चाहिये। चन्द्र लग्न में भी प्रीतम उत्तम तथा नेहर मध्यम लग्न है। पूर्णिमा व्रत, जिस दिन चतुर्दशी तिथि का पूर्णिमा तिथि से योग होता है, उसी दिन धारण करना चाहिये। कभी भी परिवा (प्रतिपदा) लग्न में व्रत धारण, पूजा न करें। ३२ घड़ी से ४० घड़ी के लग्न की गणना करके, परिवा (प्रतिपदा) घड़ी में पूजा न करें। पूर्णिमा तिथि में ही व्रत धारण करें, परिवा में न करें। जिस समय तक पूर्णिमा तिथि बनी रहती है, उसी समय के भीतर सत्यपुरुष की पूजा-अर्चना करें अर्थात् जिस दिन संध्या को चतुर्दशी तिथि में पूर्णिमा तिथि आकर मिलती है, वही पूर्णिमा का समय सत्यपुरुष के भजन पूजन, संध्या पाठ, आरती के लिये उत्तम होता है।

दिन के चार प्रहर अर्थात् १२ घण्टे तथा रात्रि के चार प्रहर (१२ घण्टे) का समय जागकर सत्यपुरुष के स्मरण ध्यान में बिताना चाहिये। कभी भी घर में बैठकर, आलस्य प्रमाद में यह समय नहीं गँवाना चाहिए यदि कोई प्राणी चारों प्रहर का जागरण नहीं कर सकता तो उसे अर्धरात्रि तक, जब पूर्णिमा तिथि रहती है, अवश्य जागरण करना चाहिये। पूर्णिमा व्रत की महिमा इतनी अपार है कि यदि कोई प्राणी अर्धरात्रि की जगह केवल एक प्रहर या एक प्रहर की एक घड़ी या फिर एक घड़ी के एक क्षण मात्र तक का भी जागरण, सत्यपुरुष के ध्यान में कर लेता है तो उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं, उसी प्रकार जैसे अग्नि में लकड़ी नष्ट हो जाती है। यदि पूनोव्रत में कोई जागरण नहीं करता है, तो उसका व्रत पूर्ण नहीं माना जा सकता है।

प्रेमपूर्वक भोजन प्रसाद, जलपान देकर उसकी सेवा करनी चाहिये। अपनी सामर्थ्य के अनुसार सन्तों को भोजन देने से, उनकी कृपा से सद्गुरु के प्रति प्रेम अनुराग की वृद्धि होती है। जोगी, जंगम, सेवड़ा, सन्यासी, दरवेश आदि भेषधारी किसी भी साधु अतिथि को अपने द्वार से खाली हाथ वापस नहीं लौटाना चाहिये।

सद्गुरु कबीर साहब संसार के सभी प्राणियों से, चाहे वह राजा हो या रंक, अमीर हो या गरीब, सबसे कहते हैं कि इसी प्रकार विधिपूर्वक, निश्चिन्त होकर पूनोव्रत को धारण करना चाहिये। जो पूनोव्रत कथा को स्वयं सुनता है और दूसरों को सुनाता है, वह स्वयं तो तर ही जाता है, दूसरे प्राणियों को भी तार देता है। पूर्णिमा व्रत में कभी भी जूठा भोजन न ग्रहण करें तथा दूसरे के घर भोजन के लिये न जायें। गुरु की सेवा करते हुये सत्यवचन बोलना चाहिये। संयम नियम का पालन दृढ़तापूर्वक करना चाहिये, पूनोव्रत सदैव धारण करना चाहिये। प्रत्येक माह पूनोव्रत रखने से सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है।

पूनोव्रत स्वयं तो धारण करना ही चाहिये, दूसरे प्राणियों को भी धारण करने के लिये प्रेरित करना चाहिये तथा व्रत के महात्म्य के सम्बन्ध में बताना चाहिये। पूर्णिमा व्रत में समस्त इंद्रियों को वश में करके, सत्यपुरुष के नाम का स्मरण करना चाहिये। पूर्णिमा जैसे मुक्तिदायक सत्यव्रत को छोड़कर, अन्य व्रतों के धारण करने से जीवों की मुक्ति कैसे होगी ? सत्यपुरुष के सत्यनाम का स्मरण पूरी निष्ठा और लगन से करना चाहिये। पूनोव्रत स्वयं सत्यपुरुष के द्वारा निर्धारित किया गया सर्वहितकारी सत्यव्रत है, अडिग मन से पूनोव्रत धारण करने पर, सद्गुरु की दया से सभी प्रकार की ऋद्धियों-सिद्धियों की प्राप्ति होती है। सत्कर्म करते हुये पूनोव्रत धारण करने से प्राणी मुक्त हो जाता है, उसे दुबारा गर्भवास में आकर जन्म नहीं लेना पड़ता है।

धर्मदास बचन

धर्मदास विनती अनुसारी, अहौ साहेब इक अर्ज हमारी ।
आप कहौ पूनो ब्रत करीये, दुख सुख में कैसे अनुसरीये ।
मूये सूतक कौनहि कारण, तेहिकर भेद कहो भवतारण ।

धर्मदास जी साहब सद्गुरु कबीर साहब से करबद्ध विनय करते हैं कि हे साहेब !

पूनो ब्रत सदा ही कीजे, मास मास देही सुख लीजे ।
आप करे औरन करवावे, पूनों ब्रत को भेद बतावे ।
पूनो ब्रत इंद्री दृढ़ राखे, हृदय नाम पुरूष को भाखे ।
पूनो छांड़ि अन्य ब्रत करहीं, बिना भेद कैसे उद्धरहीं ।
सत्यनाम सुमरे एक धारा, पूनों ब्रत पुरूष को प्यारा ।
पूनो ब्रत करे मन लाई, सर्व सिद्धि ता घर में आई ।
सुकृत होय भक्ति बहु पावे, गर्भवास में बहुरि न आवे ।

सद्गुरु कबीर साहेब धर्मदास जी से जागरण के सम्बन्ध में कहते हैं कि जिसकी सुरति सदैव सत्यपुरुष के स्मरण में लगी रहती है, जो प्राणी अपने मन को बाह्य प्रपंचों से हटाकर दृढ़तापूर्वक साहेब के भजन में लगाता है, उसी प्राणी का जागरण सत्य है। बिना आत्म-जागरण के किसी प्राणी को लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती है, अतः पूनोव्रत की कथा को ध्यान से सुनो और पूर्णनिष्ठा के साथ सत्यपुरुष के स्मरण में जागरण करो। जिसके मन में जागरण के प्रति कोई संदेह या टीका-टिप्पणी की भावना है, उसका जागरण उत्तम नहीं है। जो प्राणी दृढ़ संकल्प और पूर्ण निश्चय के साथ, बिना सोये रात भर जागकर, सत्यपुरुष के स्मरण में, गुणगान में अपने चित्त को लगाता है, उसी का जागरण सर्वोत्तम है।

हे धर्मदास ! परनिन्दा, मिथ्या भाषण, गप्पे हाँकने में व्यर्थ समय व्यतीत करने को जागरण नहीं कहा जाता है, अतः सद्गुरु की भक्ति को हृदय में धारण कर जितना भी जागरण हो सके, जागरण अवश्य करें। यदि छोटे बच्चे, वृद्ध पुरुष, शक्तिहीन रोगी नर-नारी, जो एक प्रहर, एक घड़ी या क्षण भर भी जागरण कर लेते है, तो वे सद्गुरु के प्रिय बन जाते हैं। जो प्राणी बिना श्रद्धा, विश्वास के सोता रहता है, उसे यमदूत विभिन्न प्रकार के कष्ट पहुँचाते हैं। जो प्राणी निष्ठापूर्वक सत्यपुरुष का स्मरण करता हुआ जागरण करता है, उसे जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति मिल जाती है, वह सीधे सत्यपुरुष के निवास सत्यलोक को जाता है।

पूर्णिमा के दिन प्रातः स्नान करके साधु-सन्त की सेवा और सत्संग करना चाहिये। इस दिन जो सन्तों का चरणामृत प्रसाद लेता है, उसे सद्गुरु की दया से लौकिक, पारलौकिक सुख की प्राप्ति होती है। यदि कोई अतिथि साधु द्वार पर आ जाये तो उसको

सतगुरू आप प्रकट तब भयउ, दुख दारिद्र सकल मिटि गयउ।
गयो दरिद्र लक्ष्मी घर आई, परमारथ हित बहुत लुटाई ।
पांच संत ले आप पधारे, उन दोनों का कारज सारे ।
करि चौका परवाना दीन्हा, जाय सतलोक बसेरा कीन्हा ।

सद्गुरु कबीर साहब कहते हैं, कि हे धर्मदास ! मैं इसके समस्त रहस्य का वर्णन करता हूँ उसे ध्यान से सुनो- एक वैश्य व्यापारी गुरु से दीक्षा प्राप्त कर, सद्गुरु के नाम का स्मरण और पूनो व्रत का पालन सदैव नियमपूर्वक किया करता था। दोनों स्त्री-पुरुष दृढ़ आस्था के साथ सद्गुरु की भक्ति किया करते थे। यद्यपि वे निर्धन थे, फिर भी वे परमार्थ के कार्यों में बहुत रुचि रखते थे। एक दिन पुरुष व्यापार करने के लिये बाहर चला गया, तो उसके घर में पुत्र का जन्म हुआ। सखियों ने मिलकर स्त्री से कहा कि रसोई तैयार करके तुम शीघ्र अन्न जल ग्रहण करो।

इस बात को सुनकर पुत्र की माता ने सखियों को समझाते हुये कहा कि मैं नियमपूर्वक पूनोव्रत का पालन करती हूँ, पूनोव्रत में भोजन नहीं किया जाता, सद्गुरु का, सत्यनाम का स्मरण किया जाता है। तब सखियों ने कहा कि सूतक अशुद्ध माना जाता है, अतः शुद्ध होने पर ही व्रत का पालन करो। तब पुत्र की माता ने कहा कि यह शरीर तो सदा अशुद्ध रहता है और सद्गुरु के नाम का स्मरण करने से पापी भी तर जाते हैं, अतः व्रत धारण करने के लिये सूतक अवस्था, कोई बाधा नहीं है।

इस प्रकार की वार्ता होते-होते सूर्यास्त हो गया और पूनोव्रत सहज ही पूर्ण हो गया। सभी पड़ोसिन स्त्रियों और सखियों ने मिलकर पकवान तैयार किया। सत्यपुरुष को भोग लगाने के बाद, उस स्त्री को प्रसाद दिया गया तथा सभी ने मिलकर प्रसाद को ग्रहण किया। उसी समय स्त्री का पति वापस आ गया, तब उसे भी भोजन प्रसाद दिया गया। भोजन प्रसाद ग्रहण करने के बाद, दोनों स्त्री पुरुष, सत्यपुरुष के ध्यान में लीन हो गये। उन दोनों के प्रेम को देखकर, सद्गुरु साहेब ने उन्हें प्रत्यक्ष दर्शन दिया। दोनों मिलकर उनके चरणों पर गिर गये और उनकी बंदगी की।

सद्गुरु के प्रकट होने के कारण उनका समस्त दुख, दारिद्रय मिट गया और उन्हें धन सम्पत्ति की प्राप्ति हुई, जिसका उन्होंने दूसरों के कल्याण के लिये उपयोग किया। पाँच संतों ने आकर, उन दोनों के कल्याण के लिये चौका-आरती कर, उन्हें पान-परवाना दिया, जिससे वे सत्यलोक को प्राप्त कर भवबन्धन से मुक्त हो गये।

मेरी एक विनती है, मैं एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ। आपने पूनोव्रत धारण करने के लिये कहा है, लेकिन सुख-दुख आदि परिस्थितियों में किस प्रकार व्रत धारण किया जाये ? सूतक दशा अर्थात् शिशु जन्म तथा घर में किसी की मृत्यु होने पर व्रत का पालन किस प्रकार करना चाहिये ? इसे बताने की कृपा करें।

सतगुरू वचन

कहैं कबीर सुनों धर्मदासा, सकल भेद मैं करौं प्रकाशा ।
भक्तिवान इक बणिक् सो वेशा, जिन लीन्हो है गुरू उपदेशा।
पूनो ब्रत करे इक धारा, सुमिरे सतगुरू नाम पियारा ।
नारी पुरूष एक चित कीन्हा, भाव भक्ति परवाना लीन्हा ।
लक्ष्मी हीन उदर जो भरे, ताही में परमारथ करे ।
एक दिन पुरूष वाणिज्य को गयउ,पीछे उनके पुत्रहि भयउ ।
सखियां कहैं रसोई कीजे, याको वेगि अन्न जल दीजे ।
तब सुन कहै पुत्र की माता, सखियन सो समुझाई बाता ।
पूनों ब्रत करो नित नेमा, कैसे छांड़ो सतगुरू प्रेमा ।
पूनो ब्रत मो अन्न न लीजे, सतनाम का सुमिरण कीजे ।
कहै सखियां सूतक शुद्ध नाहीं, शुद्ध होय तब ब्रत कराहीं ।
तब वह कहे सुनो री बाई, देह अशुद्ध सदा चलि आई ।
सुमरन करत अधम तर जाहीं, ब्रत को सूतक लागे नाहीं ।
ऐसे कहत दिवस सब गयउ, पूनो ब्रत सहज ही भयउ ।
सखी पड़ोसिन करि रसोई, भोग लगाय परूसा दोई ।
एक परूसा लेकर चली, वाकूं कहे जिमले अली ।
ताही समय वाको पति आयो, तब वाको ले आन जिमायो ।
करि भोजन सुमिरन चित लाये, पुरूष ध्यान में सुरत लगाये।
वे दोउ का प्रेम सुहावा , सतगुरू साहेब दर्श दिखावा ।
रतना उठ चरनन लपटाई, दंपती मिलि दोउ प्रेम बड़ाई ।

सतगुरू बचन

कहें कबीर सुनहु धर्मदासा, सकल भेद मैं करों प्रकाशा ।
अहो धर्मनि तुम पूछी नीकी, सो सुन रूचि उपजै सबही की ।
और ब्रत सुगम है भाई, पूनो ब्रत सदा सुखदाई ।
और ब्रत सब करे करावै, पूनो ब्रत का भेद न पावै ।
अब मैं भेद गोय नहिं राखों, रचना रचि आदि सो भाखों ।
प्रथम आप पुरूष थे एका, रचना रचि फिर करे अनेका ।
सत्यलोक में जिनका बासा, रवि शशि अनंत कोट प्रकाशा ।
सोई साहेब है सिरजन हारा, वाको नहिं जाने संसारा ।
पुरूष तेज वरणों नहिं जाई, जगमग रवि शशि अनंत लजाई ।
सनमुख हंस अनंत विराजे, जगमगात जगमग छवि छाजे ।
अमृत भोजन करहिं अहारा, परम पुरूष छवि निरख निहारा ।
वहां जीव पहुंचे होय न त्रासा, अमर होय सुख करहिं विलासा ।
परम पुरूष फिर रचना ठानी, रचेऊ निरंजन आदि भवानी ।
इन दोऊ भेद पुरूष ते पाया, फिर रचना का साज चलाया ।
अण्ड फोर ओंकार बनाया, ब्रह्म विष्णु शम्भु उपजाया ।
इन तीनों मिलि किन्ह पसारा, खंड ब्रम्हांड सुर नर अवतारा ।
स्वर्ग मृत्यु पाताल बनाया, तीन लोक ऐसे निरमाया ।
ब्रम्हा रचे विष्णु सुख बासा, रूद्र करे सबहिन कर नासा ।
तीन लोक में अमल पसारा, सो है सतलोक से न्यारा ।
तीन लोक में राज करावे, पुरूष पास कबहूं नहिं आवे ।
तीन लोक के ऊपर धामा, परम पुरूष जहं करे निवासा ।
प्रथम जीव सब वहां से आये, यहां आये वह लोक भुलाये ।
वाको जानत है त्रय देवा, जीव को न बतावे भेवा ।
सो कबहूँ न कहे सपने में, राखा चाहें राज अपने में ।

भक्ति भाव भादो नदी, सबै चली उतराय ।
सरिता सोई सराहिये, जो ज्येष्ठ मास ठहराय ॥

जैसे वर्षा ऋतु के भादो माह में सभी नदियों के जल में बाढ़ आ जाती है, वे उफनकर बहने लगती हैं। ऐसे ही देखा देखी तमाम लोग भक्ति प्रदर्शन करने लगते हैं, परन्तु उसी सरिता की प्रशंसा होती है, जो ज्येष्ठ माह की भीषण गर्मी में भी नहीं सूखती है, ऐसे ही, सच्चे भक्त कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी सद्गुरु की भक्ति कदापि नहीं छोड़ते हैं।

करि ब्रत महाजन की गति भई, सो धर्मनि हम तुमसो कही ।
जो फिर तुम्हरे संशय आहीं, पूछहूं भेद कहो मै ताहीं ।

महाजन वैश्य की पूनोव्रत धारण करने के कारण जो उत्तम गति प्राप्त हुई, उसका हे धर्मदास ! मैंने तुमसे विस्तार से वर्णन किया है। यदि फिर भी तुम्हारे मन में कोई संशय हो तो उसे पूछो, जिससे मैं उसका निवारण कर दूँ।

धर्मदास बचन

धर्मदास विनवे कर जोरी, सुनिए साहेब विनती मोरी ।
तुम प्रभु दयावन्त हो स्वामी, सब घट के हो अंतरयामी ।
फिर एक बात पूछन की आशा, ताको स्वामी करो प्रकाशा ।
और ब्रत सब करे करावे, पूनो ब्रत से दूर परावे ।
और ब्रत एकादशी करहीं, पूनो चित्त कबहूं न धरहीं ।
सो कारण कौन है स्वामी, सकल भेद कहो अंतरयामी ॥

धनी धर्मदास साहेब दोनों हाथ जोड़कर, सद्गुरु कबीर साहेब से विनती करते हुये कहते हैं कि हे सद्गुरु ! मेरी एक विनती है। हे मेरे स्वामी, तुम दया के सागर हो। सब के घट की बात जानने वाले अन्तर्यामी हो। मैं एक बात पूछना चाहता हूँ, उसके बारे में बताने की दया करें। संसार में लोग अन्य अनेक व्रत करते, कराते हैं, लेकिन पूनोव्रत क्यों नहीं करते हैं ? एकादशी आदि अनेक व्रत धारण करते हैं, पूनोव्रत जैसे सत्यव्रत में उनकी रूचि क्यों नहीं होती है ? इसका क्या कारण है ? इस सम्बन्ध में बताने की कृपा करें।

सुख सागर में रहे समाई, फिर नहीं हंसा भवजल आई ।
ऐंठ झूठ से रहे निनारा, कहैं कबीर वह हंस हमारा ।

सद्गुरु कबीर साहेब कहते हैं कि हे धर्मदास ! मैं तुम्हें इसके रहस्य के बारे में बताता हूँ। तुमने यह बड़ा ही अच्छा प्रश्न किया है, इसके रहस्य का ज्ञान होने पर सभी प्रणियों की रुचि बढ़ेगी। पूर्णिमा व्रत जो सदा सुखदायी कल्याणकारी व्रत है, इसकी तुलना में अन्य व्रतों की जानकारी लोगों को आसानी से मिल जाती है।

पूनो व्रत के रहस्य की जानकारी न होने के कारण, लोग अन्य अनेक व्रतों को धारण करते रहते हैं। अब मैं पूनोव्रत के रहस्य के सम्बन्ध में किसी भी बात को गोपनीय न रखकर, तुम्हें बताता हूँ। इस सृष्टि की आदि रचना के सम्बन्ध में तुम्हें बताता हूँ। जब सत्यलोक में सत्यपुरुष स्वयं अकेले विराजमान थे, तो उनके मन में सृष्टि की रचना का विचार उत्पन्न हुआ और मैं एक से अनेक हो जाऊँ, ऐसी इच्छा उत्पन्न होने पर सृष्टि की रचना प्रारम्भ हुई तथा उनके द्वारा सर्वप्रथम १६ अंशों या सुतों की उत्पत्ति हुई।

सत्यलोक में सत्यपुरुष का नित्य निवास है, अनन्त कोटि सूर्य, चन्द्र के प्रकाश के समान उनका प्रकाश है। समर्थ सत्यपुरुष जो सम्पूर्ण सृष्टि के सिरजनहार हैं, रचयिता है, उनको संसार के प्राणी नहीं जानते हैं। परमपुरुष सत्यपुरुष के तेज का वर्णन नहीं किया जा सकता है। उनके जगमग चमकदार प्रकाश के समक्ष, अनन्त कोटि सूर्य चन्द्र का प्रकाश भी छिप जाता है अर्थात् कुछ नहीं है।

सत्यलोक में सत्यपुरुष के समक्ष अनन्त प्रकाशमान हंस पुरुष विराजमान रहते हैं। वे अमृत का आहार ग्रहण करते हैं तथा सत्यपुरुष की अनुपम छवि का दर्शन करते हैं। वहाँ (सत्यलोक)पहुँचने पर जीव को किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता है, वह कालजयी होकर अमर हो जाता है तथा आनंदमग्न होकर परमसुख को प्राप्त करता है। समर्थ सत्यपुरुष ने सृष्टि रचना करते हुये निरंजन और आद्या (माया) को उत्पन्न किया।

आठवें पुत्र निरंजन ने अनेक वर्षों तक सत्यपुरुष की तपस्या की तथा सृष्टि रचना का साज सत्यपुरुष से प्राप्त किया और सृष्टि रचना करने लगे। जल पर तैरते विशाल अण्डाकार कूर्म के पेट को फाड़कर, ओंकार की उत्पत्ति की, जिससे ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीन पुत्र उत्पन्न हुये। इन तीनों देवताओं ने मिलकर सृष्टि का विस्तार किया, खण्ड ब्रह्माण्ड की रचना हुई, देव और मनुष्य योनियों की उत्पत्ति हुई। तीनों देवों के द्वारा

इनतो जान बूझ गहि मौना, पूनो पुरूष भेद कहे कौना ।
बिना भेद जीव कैसे पावे, फिर फिर तीन लोक फिर आवे ।
कबहूं स्वर्ग लोक बिलमावे, कबहूं नरक मांहि पधरावे ।
कबहू मृत्यु लोक के माहीं, जिव थिरता कहुं पावत नाहीं ।
ऐसे सुन जीवन की त्रासा, परम पुरूष मुख वचन प्रकाशा ।
हमको कह्यो वेग तुम जाओ, भक्ति ज्ञान दे जीव चिताओ ।
मैं हूं परम पुरूष का दासा, सत्यलोक में है रहिवासा ।
आज्ञा पाय जगत में आऊं, कहुं गुप्त कहुं प्रगट रहाऊं ।
नहिं मेरे हाड़ चाम अरू मांसा, मैं नहिं पायो गरभ निवासा ।
जीव उबारन जग में आऊं, समझे ताही लोक पहुंचाऊं ।
जो तुम पूछ्उ ब्रत विचारु, धर्मनि सुनो सकल यह सारु ।
बहुत प्रकार जीव ब्रत कराहीं, रहै सो तीन लोक के माहीं ।
पूनो महिमा पुरूष बखानी, सत्यलोक की सदा निसानी ।
कहै बिना यह भेद न पावे, कहै सुने जब उर में आवे ।
ब्रत करे अरू भजन विलासा, सुरत रखे सतगुरू के पासा ।
सोई जीव सतलोक सिधावे, फिर भवसागर में नहिं आवे ।
और ब्रत एकादशी करहीं, चौबीसों का फल मन धरहीं ।
चौबीस का फल न्यारा, न्यारा, ताका मत चौबीस विस्तारा ।
फल कारण जो ब्रत कराई, फल भुगते फिर कछु न रहाई ।
ताते फल की आस निवारे, परम पुरूष दरशन चित्त धारे ।
मुसलमान जो रोजा करहीं, फिर फिर यम के फंदा परहीं ।
रोजा करे दया उर नाहीं, जीव बधे वे यमपुर जाही ।
यह तो कर्मकाण्ड व्यवहारा, मुक्ति भेद इनसे है न्यारा ।
पूनो ब्रत मूल ले राखा, और ब्रत सबही है साखा ।
परम पुरूष मन कीन्ह विचारा, पूनो ब्रत मुक्ति विस्तारा ।
पूनो ब्रत करे लव लाई, पुरूष प्रताप परम सुखदाई ।

अनुसार अन्य अवतारों का प्राकट्य पिंड रूप में गर्भ के द्वारा हुआ है तथा अवतार लेने के बाद, अवतार का उद्देश्य पूर्ण होने पर, अन्त में पिंड रुप में शरीर ही पाया जाता है। परन्तु सद्गुरु कबीर साहेब का प्राकट्य कमल पुष्प पर हुआ और अन्त में मगहर में पिण्ड शरीर के स्थान पर, पुष्प ही पाया गया था।)

सद्गुरु कबीर साहेब कहते हैं कि मैं संसार में केवल जीवों के उद्धार के लिये ही प्रकट होता हूँ, जो प्राणी मेरे वचन का अनुसरण करता है, उसे निश्चित रूप से परम सुखधाम सत्यलोक पहुँचाता हूँ। हे धर्मदास ! तुमने जो पूनोव्रत के सम्बन्ध में प्रश्न पूछा है, उसके सम्बन्ध में मुख्य बात को ध्यान से सुनो। संसार में प्राणी अनेक प्रकार के व्रतों को किसी निश्चित उद्देश्य के लिये धारण करते व कराते हैं, लेकिन वे सभी प्राणी तीनों लोक में ही जन्म-मरण के चक्कर में फँसे रह जाते हैं। तीनों लोकों के पार, सत्यपुरुष के पास तक उनकी पहुँच नहीं होती है।

पूनोव्रत की महिमा स्वयं सत्यपुरुष ने अपने मुखारबिन्द से बताई है। पूनोव्रत के साधक के लिये सत्यलोक का द्वार खुल जाता है। पूनोव्रत कथा के सुनने सुनाने से व्रत की महिमा का ज्ञान होता है। ज्ञान होने पर हृदय में अनुराग, प्रेम की अनुभूति होती है। निष्ठापूर्वक पूनोव्रत को धारण करके जो प्राणी सद्गुरु का गुणगान करता है, जिसकी सुरति सद्गुरु के स्मरण में लीन रहती है, वह प्राणी निश्चित रूप से सत्यलोक गमन करता है। परमपद को पाकर उसे फिर दुबारा भवसागर में लौटकर नहीं आना पड़ता है।

जो प्राणी अन्य व्रतों को, एकादशी आदि व्रत को धारण करता है, प्रत्येक माह में दो बार तथा वर्ष भर में पड़ने वाली चौबीसों एकादशी का व्रत, पुण्यफल की आशा में धारण करता है, तो प्रत्येक एकादशी व्रत का फल अलग-अलग उसे प्राप्त होता है। निर्धारित फल की आशा में व्रत रखने से प्राप्त अर्जित पुण्य फल को भोग लेने के बाद फिर उस प्राणी के पास शेष कुछ नहीं बचता है। अतः अनेक देवी-देवताओं के व्रत को धारण करने के स्थान पर, सब के मूल परमपुरुष सत्यपुरुष, जिनके द्वारा सबकी उत्पत्ति हुई है, उन्हीं एक सत्यपुरुष की भक्ति को हृदय में धारण करना चाहिये। मुसलमान रमजान के महीने में दिन में रोजा व्रत रखते हैं, रात में भोजन के लिये जीवों का वध करते हैं।

यदि उनके हृदय में जीवों के प्रति दया, प्रेम का भाव नहीं उत्पन्न होता, तो अन्त में उन्हें यमलोक जाना पड़ेगा। कर्मकाण्ड का परिणाम भोगना ही पड़ता है, मुक्ति का

स्वर्गलोक, मृत्युलोक और पाताल लोक, इन तीनों लोकों का निर्माण हुआ।

ब्रह्मा ने सृष्टि रचना का कार्य, विष्णु ने पालन-पोषण और शंकर ने संहार का कार्य किया। इन्हीं त्रिदेवों का तीनों लोकों में साम्राज्य है। सत्यलोक इनसे न्यारा लोक है, जहाँ पर इनका शासन नहीं चलता। तीन लोकों तक ही त्रिदेवों का शासन सीमित है, ये सत्यपुरुष के पास कभी नहीं जाते हैं। आदि, अनादि परमपुरुष सत्यपुरुष का निवास अमरलोक सत्यलोक में है, जो तीनों लोकों के ऊपर, तीनों लोकों के पार है। संसार के सभी जीव सत्यलोक से यहाँ पृथ्वी पर आकर जन्म लेते हैं। संसार में जन्म लेने के बाद, सांसारिक आकर्षणों में फँसकर, वे अपने निजलोक सत्यलोक को भूल गये हैं।

इस रहस्य को तीनों देवता ब्रह्मा, विष्णु, महेश जानते हैं, परन्तु इस भेद का ज्ञान वे जीवों को नहीं देते हैं। तीनों लोकों में उनका राज्य बना रहे, सभी प्राणियों के ऊपर उन्हीं का शासन चलता रहे, इसलिये इस रहस्य का ज्ञान वे जीवों को स्वप्न में भीनहीं देते हैं। तीनों देव जान-बूझकर इस सम्बन्ध में मौन रहते हैं, अतः जीवों को सत्यपुरुष और उनके सत्यव्रत पूनोव्रत की जानकारी नहीं हो पाती है। यही कारण है कि इस गुप्त भेद या रहस्य की जानकारी के अभाव में जीवों को बार बार संसार में आकर जन्म लेना पड़ता है। सत्कर्मों द्वारा अर्जित पुण्य फलों के भोग के लिये, जीव कभी स्वर्गलोक में विचरण करता है, तो कभी दुष्कर्मों द्वारा अर्जित फल भोगने के लिये, नरक लोक में जाता है, तो कभी पुण्य फल भोग लेने के पश्चात् जीव पुनः मृत्युलोक का चक्कर काटता रहता है। जीव को स्थिर पद (मुक्ति) की प्राप्ति नहीं होती है।

इस प्रकार जीवों को दुखी देखकर परमपुरुष सत्यपुरुष ने स्वयं मुझे आदेश दिया- हे ज्ञानी ! (ग्रन्थों में सद्गुरु कबीर साहेब का सत्यलोक का नाम ज्ञानी कहा गया है।) तुम संसार में शीघ्र जाकर, लोगों को भक्ति ज्ञान देकर सचेत कर दो। हे धर्मदास ! मैं सत्यपुरुष का दास, सेवक हूँ। मेरा निवास स्थान सत्यलोक में है, मैं सत्यपुरुष की आज्ञा से संसार में जीवों के कल्याण के लिये कभी गुप्त रूप में, कभी प्रगट रूप में अवतरित होता हूँ। मेरा शरीर हड्डी, माँस, चर्म से बना शरीर नहीं है। मैं अन्य मानवों की तरह किसी गर्भवास में नहीं आता हूँ।

(**नोट :-** *कलियुग में सद्गुरु कबीर साहेब काशी के लहरतारा तालाब में कमलपुष्प पर, बालक के रूप में अवतरित हुये थे। स्वामी अष्टानन्द जी प्रत्यक्षदर्शी हैं। शास्त्रों के*

से दूर रहता है, उस प्राणी का उत्पीड़न कालपुरुष भी नहीं करते हैं।

पूरनमासी सदा निवासी, अमरलोक से आई है।
यही ब्रत करो भाई साधु, बंदी छोर बताई है॥

पूर्णिमा में पूर्ण परमपुरुष का सदा एक रस नित्य निवास है, यह पूर्णमासी सत्यपुरुष के सत्यलोक से आई है। बंदीछोर सद्गुरु कबीर साहेब ने सभी प्राणियों, साधु-सन्तों से पूर्णिमा ब्रत की साधना करने के लिये कहा है।

पूनो महातम सुने सुनावे, चौरासी में बहुरि न आवे।
पूनो पाठ करे नित नेमा, भक्ति होय हिय उपजे प्रेमा।
नित्य नेम जो बनि नहिं आवे, तो पूनौ दिन अवश्य करावे।
नित्य नेम जो सुने सुनावे, ताको काल दगा मिट जावे।
करहिं पुरूष तिनकी रखवारी, अमर लोक महँ ले बैठारी।
सबही देवता करई बड़ाई, धन्य हंसा सतलोक सिधाई।
ब्रह्मा विष्णु शंभु सब गावे, धन्य हंस सतलोक सिधावे।
कहें कबीर सुनो धर्मदासा, परम धाम की राखो आशा।
पूनो महातम कहँ लग कहिये, सुनों धर्मदास परमपद लहिये।
तुम पूछी हम कथा सुनाई, सुन समझहि सो सतपद पाई।

जो प्राणी पूनोब्रत कथा के महात्म्य को स्वयं सुनता है और दूसरों को सुनाता है, वह चौरासी लाख योनियों के चक्कर से मुक्ति पा जाता है। पूनोब्रत कथा का नित्य नियमपूर्वक पाठ करने से, हृदय में सद्गुरु कबीर साहेब के प्रति परम अनुराग और भक्ति भावना की उत्पत्ति होती है। यदि कोई व्यक्ति पूनोब्रत कथा का पाठ नित्य न कर सके, तो पूर्णिमा के दिन अवश्य पाठ करना चाहिये। नित्य नियमपूर्वक पूनोब्रत कथा के सुनने, सुनाने से काल के फंदे से छुटकारा मिल जाता है।

सत्यपुरुष ऐसे सत्यब्रतधारी पुरुष की स्वयं रक्षा करते हैं और अन्त में उसे सत्यलोक की प्राप्ति होती है। सत्यलोक जाने वाले ऐसे परमभक्त की प्रशंसा सभी देवता करते हैं, ब्रह्मा, विष्णु, महेश ऐसे भक्त की सराहना करते हैं कि उसे सत्यपुरुष के सत्यलोक की प्राप्ति हुई है। सद्गुरु कबीर साहेब धर्मदास जी से कहते हैं कि हे धर्मदास ! पूनोब्रत की महिमा का वर्णन कहाँ तक करूँ। इसके श्रवण मात्र से परमपद की प्राप्ति होती है। तुमने

रहस्य इन कर्मकाण्डों से अलग, न्यारा है। पूनोब्रत सबके मूल परमपुरुष सत्यपुरुषसे सम्बन्धित मूल ब्रत है, और अन्य सभी ब्रत इसकी शाखायें हैं अर्थात् तमाम देवी-देवताओं से सम्बन्धित ब्रत हैं। परमपुरुष, समर्थ सत्य पुरुष ने जब सृष्टि की रचना प्रारम्भ की, उसी समय अपने मन में विचारकर, जीवों के उद्धार, जीवों की मुक्ति के लिये पूनोब्रत का विधान भी बनाया है। जो प्राणी पूर्ण आस्था विश्वास के साथ लगन पूर्वक पूनोब्रत रखता है, वह सत्यपुरुष की अपार दया से अलौकिक आनंद को प्राप्त करता है। उसे परमसुख का सागर मिल जाता है, फिर उसे भवसागर में नहीं आना पड़ता है। सद्गुरु कबीर साहेब कहते हैं कि मिथ्या अभिमान और असत्य से जो अलग रहता है, वही हमारा सबसे प्रिय हंस है।

प्रथम मंदिर झराय के, चौका देय पुताय।
महाप्रसाद बनाय के, सतगुरू भोग लगाय॥

पूर्णिमा के दिन घर को झाड़-बुहार कर, साफ स्वच्छ करके, चौका रसोई की पुताई कर, साफ-स्वच्छ बना लें। सद्गुरु का महाप्रसाद तैयार करके, सद्गुरु को भोग लगाना चाहिये।

तब दीपक ले आन प्रकाशा, सत्यलोक उन कीन्हा वासा।
झिलमिल जोत बरे प्रकाशा, भजन करे मन थिर कर श्वासा।
अजर वस्तु को पावे भेदा, कहैं कबीर सो हंस अछेदा।
उत्तम चंदन पुष्प की माला, बंदनबार रचि धर्मशाला।
उत्तम तिथि अरू ब्रत चित धरहीं, नारी पुरूष नहिं संगम करहीं।
पूनों पुरूष नारी नहिं संगा, ताको काल करे नहिं दंगा।

दीपक जलाकर, सद्गुरु कबीर साहेब की आरती उतारनी चाहिये। स्थिर चित्त होकर, एकाग्र मन से सत्यपुरुष का भजन स्मरण करना चाहिये। सद्गुरु कबीर साहेब कहते हैं कि जरा रहित अक्षय शाश्वत परमतत्व को, जो हंस प्राणी जान लेता है, वह अखण्ड, अभेद्य, अविनाशी हो जाता है। उत्तम चंदन, पुष्पमाला, बंदनवार से घर में पवित्र चौका स्थल को सजाना चाहिये।

पूर्णिमा सबसे उत्तम तिथि है, अतः दृढ़ चित्त से सत्यब्रत पूनोब्रत को धारण करते हुये, स्त्री-पुरुष को संयम नियमपूर्वक रहना चाहिये। जो प्राणी पूनोब्रत के दिन स्त्री संसर्ग

जो यह कथा गुरू मुख सुनहीं, सुनत प्रेम हूलस हिय गुनहीं ।
गुरू विमुखन के मन नहिं भावे, करम चिकनीया निंदा लावे ।
तिनको फल भुगते गो सही, प्रथमहि मूरख चेते नहीं ।
होय चेतन सुमरहि चितलाई, सुन धर्मनि सोइ जीव सुखपाई ।
सुख पाय प्रेम बढ़ाय सतगुरू संत जन कृपा करें ।
कर ब्रत धर विश्वास उर जीव सकल संकट दूर करें ।
कही कथा पूनो सुन हिय धरे भक्ति निर्मल पावहीं ।
दृढ़ नेम व्रत कर प्रेम प्राप्ति दूत तेही न सतावहीं ॥
यह भक्ति खांड़ा धार कठिन कराल कोउ कोउ पग धरे ।
पुरखा तरही शत कोटि लेकर बहुरि भवजल नहिं परे ॥
सुनि बचन सतगुरू दास धरमनि विविध विधि स्तुति करे ।
हिय पुलकि जलभर नयन गहि पद कमल रज सिर पर धरे ॥

जो प्राणी अपने गुरु के मुखारविन्द से इस पूनोव्रत कथा का श्रवण करता है, उसकेहृदय में अपार प्रेम उमड़ पड़ता है। जो बिना गुरु के अर्थात् निगुरे हैं, उनके मन को यह कथा बिल्कुल अच्छी नहीं लगती है, क्योंकि उनका स्वभाव ही निन्दा करना है। वे अज्ञानी है, लेकिन यदि वे अन्त तक नहीं चेतते हैं, तो उन्हें अनेक प्रकार के कष्ट भोगने पड़ते हैं।

जो सद्शिष्य पूनोव्रत कथा के श्रवण से अपने मन, चित्त को सत्यपुरुष के सुमिरण में लगाता है, उसी को परमसुख की प्राप्ति होती है। उस सद्शिष्य के सद्गुरु के प्रति परम अनुराग को देखकर, उसे सभी सन्तों की कृपा दृष्टि का लाभ भी मिलता है। पूर्ण आस्था, विश्वास के साथ जो सद्शिष्य पूनोव्रत को नियमपूर्वक धारण करता है, उसके सभी संकट दूर हो जाते हैं।

पूनोव्रत कथा के श्रवण से, हृदय में सद्गुरु की पावन भक्ति भावना जागृत होती है। दृढ़ निश्चय के साथ नियमपूर्वक व्रत रखने वाले प्राणी को यमदूत नहीं सताते हैं। सद्गुरु की भक्ति तलवार की धार के समान कठिन है। अनेक जन्मों के पुण्य के फल स्वरुप कोई-कोई बिरला पुरुष ही सद्गुरु के भक्ति मार्ग में अपना कदम बढ़ाता है। हे धर्मदास !

पूनो-महात्म्य के सम्बन्ध में प्रश्न किया था, अतः मैने पूनोव्रत का महात्म्य बता दिया है। जो प्राणी पूनोव्रत की महिमा को समझकर, पूनोव्रत धारण करते हैं, उन्हें निश्चित रूप से परमपद की प्राप्ति होती है।

मुक्ति भेद तुम से कह्यो, दृढ़ कर राख शरीर ।
निरभय होय निशंक भजो, सहजे मिले कबीर ॥

मुक्ति के रहस्य को मैने तुम्हें स्पष्ट रूप से बता दिया है, तुम दृढ़ संकल्प के साथ पूनोव्रत धारण करो तथा निर्भय होकर, बिना किसी सन्देह या भ्रम के, सद्गुरु का नाम स्मरण करो।

हम कछु पक्षपात नहिं राखी, सब जीवन के हित की भाखी ।
परम पुरूष की महिमा गाई, सोई पुरूष जिन सृष्टि बनाई ।
नाम महातम प्रगट जग भाखा, सो प्रसिद्ध कछु गोय न राखा ।
फिर वरण्यो संतन के आगे, जीव तरहीं जेहि संगत लागे ।
पुनि सतगुरू की महिमा कही, गुरू सोई सकल सिरोमणि सही ।
जीव चराचर या जगमाहीं, बिन गुरूगम कोउ की गति नाहीं ।

मैने बिना किसी पक्षपात या भेदभाव के, संसार के सभी जीवों के कल्याण के लिये, पूनोव्रत कथा के रहस्य को बता दिया है और परमपुरुष, जिन्होंने सृष्टि की रचना की है, उनकी महिमा का गुणगान किया है। सत्यपुरुष के नाम की महिमा पूरे संसार में प्रसिद्ध है, उसी का वर्णन मैने जीवों के उद्धार के लिये किया है। नाम-महिमा का वर्णन सन्तों के आगे किया है, जिससे जीव उनके सत्संग से भवसागर के पार उतर जायें।

सद्गुरु की महिमा का मैने वर्णन किया है, संसार में वही गुरु सर्व शिरोमणि कहलाता है, जो सद्गुरु की महिमा का वर्णन करता है। संसार में चल, अचल चाहे जिस प्रकार के जीव हों, बिना गुरु के आज तक किसी का उद्धार नहीं हुआ है।

रामकृष्ण से को बड़ा, उनहूं ने गुरू कीन्ह ।
तीन लोक के वे धनी, सोई गुरू आगे आधीन ॥

देवाधिदेव भगवान विष्णु के अवतार राम, कृष्ण से बड़ा इस संसार में कौन है ? उन्होंने भी अपना गुरु बनाया है। तीनों लोकों के राजा होते हुये भी वे गुरु के आगे सदैव नतमस्तक रहते हैं।

॥ सत्यनाम ॥

अथ पूनम साधन का सुमिरण

अविनाशी को यही अवाज, वचन प्रकाश सुधरे सब काज ।
पुरूष सरुपी बोले बानी, सेवे सुर नर मुनि ज्ञानी ध्यानी ।
सेवे ब्रह्मा शंकर जोगी, सेवे विष्णु निरंजन जोगी ।
नौ नाथ चौरासी सिद्धावे, जोत सरुपी पूनम धावे ।
पूनम ब्रत चौका गृह करे, ताका कारज सबही सरे ।
सहजे चौका आरती करहीं, श्रद्धा सरुपी पूजा धरहीं ।
श्वेत वस्त्र तिलक शिर धरहीं, अमृत भोजन पारस करहीं ।
श्रीफल पान फूल फल चढ़ावे, रूपा मोहर नरियर धरावे ।
श्वेत वस्त्र थाल पर धारो, एकोतर पुरखा पूनम तारो ।
अविचल पूनम मोये जोग तरे, नारी ना करिए भोग संकट परे।
पूनम ब्रत करी रहनी करनी करे, सतगुरू साहेब से ध्यान धरे।
करे न रोटी न जारै हाथ, तुम आरोगी श्री दीनानाथ ।
एक सूरत से पूनम करे, नागा भूखा कबहुं न मरे ।
साधु संत शब्द धुन करे ता पुरूष की सहाय गोसांई करे ।
दुख दारिद्र ता घर से डोले, अन्न धन लक्ष्मी आय मिले ।
जो पूनम का जाने भेव, तो आपही करता आपही देव ।
पूनम महातम करो प्रकाश, नारी पुरूष सेवा के दास ।
कहै कबीर सुनों धर्मदास, सत्य पुरूष की राखो आस ।

परमपुरुष अविनाशी सत्यपुरुष के वचन का पालन करने से मानव, प्राणी के सभी बिगड़े हुये काम बन जाते हैं। सत्यपुरुष के वाणी वचनों को हृदय में धारण कर, सदैव सत्य बोलना चाहिए। सत्यपुरुष के स्मरण में सुर, नर, मुनि, ज्ञानी, ध्यानी सभी सदैव लीन रहते हैं। सत्यपुरुष की सेवा में ब्रह्मा, शंकर जैसे- महायोगी, विष्णु, निरंजन सदैव रत रहते हैं। सत्यपुरुष के परम प्रकाश से ओत-प्रोत पूर्णिमा की साधना के लिये नौ नाथ, चौरासी ऐसा सद्शिष्य हंस (जीव) अपने सौ करोड़ पूर्वजों को भी अपने साथ तार देता है, उसे फिर दुबारा भवसागर में नहीं आना पड़ता है।

हे धर्मदास ! सद्गुरु का जो सच्चा सेवक है, वह सद्गुरु की विविध प्रकार से स्तुति करता है तथा वह अपने हृदय में असीम आनन्द भरकर, अश्रुपूरित नेत्रों से, सद्गुरु के श्री चरणों की रज, अपने मस्तक से लगाता है।

गहे चरण लपटाय, धर्मदास उठ विनय कर ।
दीन्हों मोहि लखाय, पूनो महातम भेद गुरू ।

धर्मदास साहब विनती करते हुये सद्गुरु के श्री चरणों से लिपटकर कहते हैं कि हे सद्गुरु ! आपने दया करके मुझे सत्यव्रत पूनोव्रत के महात्म्य को भली भाँति बता दिया है।

शुभ पुहुप दीप बसावनी सत्य पुरूष रूप लखावनी ।
राग द्वैष मिटावनी है कथा अति मन भावनी ॥
निज ज्ञान भक्ति पावनी दुःख द्वंद दाह नसावनी ।
वैराग्य योग बढ़ावनी शुभ धर्म सर्व सिखावनी ॥
ब्रह्मांड आदि बतावनी अरु मध्य अंत दिखावनी ।
जेहि श्रवण सब सिद्धि पावनी अरथादि मोक्ष पठावनी ॥

हे सद्गुरु कबीर साहेब ! आप शुभ्र श्वेत पुष्प द्वीप में निवास करने वाले, सत्यपुरुष के रूप को लखाने वाले हैं। आपने जिस परम पावन व्रत कथा का वर्णन किया है, वह निश्चित रूप से समस्त राग द्वेष को मिटाने वाली, मन भावन कथा है। इस कथा के श्रवण से, प्राणियों को अपने निज स्वरूप का ज्ञान और सत्यपुरुष की भक्ति प्राप्त होगी। यह प्राणियों के समस्त दुख, द्वन्द्व को नष्टकर, संतप्त मानवों को सुख देने वाली व्रत कथा है।

इस व्रत कथा के श्रवण से सद्शिष्य के हृदय में, योग, वैराग्य की वृद्धि होती है और सत्य धर्म का उदय होता है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के आदि, मध्य और अन्त को दिखाने वाली इस पावन व्रतकथा के श्रवण से, प्राणी को समस्त सिद्धियों और चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति होती है। अन्त में मानव जीवन के चरम लक्ष्य मुक्ति पद, सत्यलोक की प्राप्ति होती है।

॥ इति श्री पूनो महात्तम टीका सम्पूर्णम् ॥

अथ पूनोव्रत महात्म्य

पूनोव्रत आरती कराई, ताकर फल कछु वरणि न जाई ।
गोकुल आगम बहु गुण गाई, कोटि शिवरात्रि जागरण लाई ।
कोटि एकादशी के फल पाई, सो फल पूनम ब्रत भाई ।
आगम चौदस अमावस आई, जैन धर्म तप बहुत कराई ।
सत जोजन सुमेर शिखर ह्वै आई, पुष्कर प्रकरमा चलि फिरि लाई ।
रवि सोम मंगल गुरु राई, सो फल पूनो ब्रत कराई ।
हक्क सो साहेब सदा हुजूर, काफर से तो साहेब दूर ।
कलमा नमाज बांग धुन लाई, तीसो रोजा महाकष्ट ते पाई ।
अन्न पाणि खाय पिये नहिं भाई, सो फल एक पूनम ब्रत कराई ।
अड़सठ तीरथ फिर फिर आवे, अश्वमेध यज्ञ की फल पावे ।
कोटि कन्या गो दान देवाई, सोई फल पूनम का व्रत कराई ।
पूनम ब्रत करो एक ध्यान, वाको देऊँ सर्व फल दान ।
कहै कबीर मैं देऊं राज, देऊं नवो निधि सारो काज ।
देऊँ पुत्र कलत्र भंडारा, देऊं हस्ती तुरे तो सारा ।
देऊँ रतन पदारथ चारा, देऊं मन इच्छा ते मंगल सारा ।
सुरति करिये सुमिरण करे, जन्म अनेक को पातक हरे ।
अंजान जीव की कीजे धाता, सोई पाप होत निसपाता ।
वेद शास्त्र सबही यह कहे, पूनम समान ब्रत ना लहे ।

जो प्राणी पूनोव्रत के दिन, सद्गुरु साहब की आरती करता है, उसे जो अपार पुण्य फल मिलता है वह अवर्णनीय है, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता है । आगम वेद शास्त्र, गोकुल भ्रमण की महिमा का बड़ा गुणगान करते हैं, उस गोकुल भ्रमण से प्राप्त पुण्यफल तथा एक करोड़ शिवरात्रि के जागरण, एक करोड़ एकादशी व्रत को धारण करने से जो फल किसी प्राणी को प्राप्त होता है, वह सब केवल एक पूनोव्रत को धारण करने से सिद्ध सभी अग्रसर रहते हैं ।

पूर्णिमा व्रत के दिन, जो प्राणी अपने घर में चौका आरती करता है, उसके सभी कार्य पूर्ण हो जाते हैं तथा मनोकामनायें पूर्ण हो जाती है । सहज रूप से प्रत्येक व्यक्ति को चौका आरती करनी चाहिये तथा सत्यपुरुष की पूजा श्रद्धा, विश्वास के साथ करनी चाहिये । चौका करने वाले व्यक्ति को स्वच्छ सफेद वस्त्र धारण करना चाहिये, तिलक लगाना चाहिये तथा अमृत भोजन (सद्गुरु के प्रसाद को) उपस्थित संत, सेवक, सती में वितरित करना चाहिये ।

जो प्राणी चौका-आरती में नारियल, पान, फूल, फल चढ़ाता है, रुपया, मोहर आदि को थाल में रखकर, सफेद वस्त्र से उसे ढाँककर, पूर्ण निष्ठा के साथ पूर्णिमा के दिन, सत्यपुरुष की आरती करता है, उसके एकोत्तर (१०१) पूर्वज तर जाते हैं । पूर्णिमा व्रत की साधना अविचलित मन अर्थात् मन की पूर्ण एकाग्रता से करनी चाहिये, स्त्री संसर्ग से दूर रहना चाहिये । पूर्णिमा व्रत में शुभ रहनी-गहनी अर्थात् सदाचरण का पालन करते हुये, सद्गुरु साहेब का ध्यान स्मरण करना चाहिये । जो शुभ कर्म करते हुये, किसी भा पाप कर्म से दूर रहता है, ऐसा सद्शिष्य, दीनदयाल सद्गुरु साहेब की दया से समस्त व्याधियों से मुक्त हो जाता है ।

जो प्राणी अपनी सुरति को साधकर, एकाग्रमन, चित्त से पूनोव्रत धारण करता है, उसकी समस्त दरिद्रता दूर हो जाती है । वह कभी नंगा भूखा नहीं मर सकता है । जो साधु संत सत्यपुरुष के सत्यनाम की धुन में रत रहते हैं, उनकी सहायता सत्यपुरुष स्वयं करते हैं। पूनो व्रत के साधक के गृह से समस्त दुख, दरिद्र दूर हो जाते हैं, उसे भौतिक सम्पदा, अन्न, धन आदि की प्राप्ति होती है । जो प्राणी पूनो के रहस्य को जान लेता है, वह सद्गुरु की दया से सत्यस्वरुपी हो जाता है । पूनो महात्म्य की महिमा अमित, अपार है, जो सद्गुरु साहेब की पूर्ण निष्ठा के साथ सेवा करता है, वही सद्गुरु का सच्चा सेवक, दास बनता है। सद्गुरु कबीर साहेब कहते हैं कि हे धर्मदास ! तुम सदैव सत्यपुरुष के चरणों की आशा अपने हृदय में रखो ।

सत्यनाम सुमिरण करो, राखो दृढ़ विश्वास ।
भवसागर ते जाय तरो, अमर पुरूष के पास ॥

मन में दृढ़ विश्वास रखकर सत्यनाम का स्मरण करो । इस प्रकार इस महाभयानक भवसागर से पार उतरकर अमर अविनाशी सत्यपुरुष के चरणों का सानिध्य प्राप्त करो ।

●●

सब केवल एक पूनोव्रत के उपवास से प्राप्त हो जाता है। संसार में देखा गया है कि प्रायः लोग घटते हुये चन्द्रमा की पूजा, नमन करते हैं, अर्थात् पूर्ण चन्द्र की घटती हुई तिथियों जैसे दूज, तीज, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, एकादशी आदि तिथियों में व्रत उपवास रखते हैं, परन्तु जिस दिन पूर्ण चन्द्रमा का पूर्ण प्रकाश (पूर्णिमा तिथि) रहता है, अज्ञानतावश उसकी उपासना, नमन नहीं करते हैं अर्थात् पूर्णिमा व्रत को धारण नहीं करते हैं। पूर्ण चन्द्र अर्थात् पूर्णिमा व्रत की उपासना वही प्राणी करता है, जिस पर पूर्ण सद्गुरु की दया दृष्टि हो जाती है और जो पूर्ण गुरु का सच्चा शिष्य होता है।

●●

ही प्राप्त हो जाता है।

जैन धर्म के अनुयायी भाद्रपद माह के उत्तरार्द्ध में आठ दिन का पर्यूषण पर्व तथा महावीर स्वामी के निर्वाण दिवस अमावस्या (दीपावली पर्व) के आने पर, यथाशक्ति बहुत साधन और तप करते हैं और पुण्य फल अर्जित करते हैं। सौ योजन पर स्थित सुमेर शिखर की यात्रा करने पर तथा पुष्कर तीर्थ की परिक्रमा करने पर, रवि, सोम, मंगल, वृहस्पति को व्रत साधना से जो फल मिलता है, वह समस्त पुण्यफल पूनोव्रत को धारण करने से ही मिल जाता है। असत्य, अज्ञान का रास्ता छोड़कर, खुदा की इबादत में जो मनुष्य सत्य और न्याय पथ पर चलता है, वही सच्चा मुसलमान है।

सत्य और न्याय के मार्ग पर चलने वाले जीव को साहेब का दर्शन प्राप्त होता है, अधर्मी व्यक्ति से साहेब सदा दूर रहते हैं। नमाज, कलमा पढ़ने, बांग धुन लगाने, तीसों रोजा बिना अन्न-पानी के रखने से जो फल प्राप्त होता है, वह सब केवल एक पूनोव्रत को धारण करने से ही मिल जाता है। अड़सठ तीर्थों की परिक्रमा करने, अश्वमेध यज्ञ करने से तथा करोड़ों कन्यादान और गोदान करने से जो फल किसी प्राणी को प्राप्त होता है, वही समस्त फल एक पूनोव्रत को धारण करने से मिल जाता है।

सद्गुरु कबीर साहेब कहते हैं कि जो प्राणी सत्यपुरुष के सत्यव्रत (पूनोव्रत) का साधक है, उसे मैं समस्त राज्य, सम्पदा, नवों निधियाँ, पुत्र, कलत्र, हाथी-घोड़ा, चारों रतन पदार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) का भंडार सौंप देता हूँ। उसकी समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति करता हूँ। जो प्राणी अपनी सुरति को सत्यपुरुष के स्मरण में लगाता है, उसके अनेक जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं। अबोध, निरीह जीव का वध करने पर जो पाप मनुष्य के द्वारा होता है, उसका निवारण भी, पूनोव्रत की साधना करने से सहज ही हो जाता है। वेद, शास्त्र सभी का कहना है कि पूर्णिमा व्रत के समान कोई व्रत नहीं है।

कोटि बार गये काशी, कोटि बैकुंठ लै वास ।
कोटि संत का दर्शन करे, एक पूनो के उपवास ॥
घटत चंदा सब कोई नमे, पूरा नमे न कोय ।
पूरा चंदा सोई नमे, जो पूरा गुरु का होय ॥

एक करोड़ बार काशी तीर्थ का भ्रमण करने से एक करोड़ बार बैकुण्ठ में निवास करने पर, एक करोड़ सन्तों का दर्शन करने से जो पुण्यफल प्राणी अर्जित करता है, वह

॥ सत्यनाम ॥

अथ बरसाइत महात्तम

धर्मदास वचन

धर्मदास चित अति हर्षाई, प्रभु लीला तुम बरनि न जाई ।
अमित कला जीवन सुखदाता, भव बूड़त गहि राखेउ ताता ।
हे प्रभु अर्ज करों इक तुमसो, कृपा दृष्टि के बरनौं हमसो ।
सरगुन रामकृष्ण अवतारा, ताको माने सब संसारा ।
जन्म तिथि तिहुंपुर अधिकारी, ऋषि गंधर्व माने नर नारी ।
कर्म देह को बड़ो महातम, ब्रत करे और साधे आतम ।
निरगुन आप प्रगट तन धारा, निहकामी शरीर विस्तारा ।
सो तिथि प्रगट सुनू संक्षेपा, ताहि महातम कहिए लेपा ।
पूनों आदि उपासन कहेऊ, जन्म तिथि काहे गोय रहेऊ ।
कृपा सिंधु दीन्हा मोहि भारा, ताते पूछे यह व्यवहारा ।
बरसाइत फल कहिए सांई, मैं पूछो प्रभु दास की नांई ।
अस कहीं परेउ चरण अधीना, प्रभु उठाय निजकर गहि लीना॥

धनी धर्मदास जी साहब आनन्द मग्न होकर सद्गुरु कबीर साहब से कहते हैं कि हे स्वामी ! आपकी लीला का वर्णन नहीं किया जा सकता है । आपकी अपार महिमा, जीवों को सुख प्रदान करने वाली है, आपने प्राणियों को भवसागर में डूबने से बचा लिया है ।

हे प्रभु ! मेरी आपसे एक प्रार्थना है, मुझ पर दया दृष्टि करते हुये बताने की कृपा करें। राम, कृष्ण सगुण अवतार हैं, जिन्हें सारा संसार मानता है, तीनों लोक में ऋषि, गन्धर्व, नर, नारी सभी उनकी जन्मतिथि मनाते हैं । कर्मयोग की बड़ी महिमा है । लोग व्रत उपवास करके आत्म-साधना करते हैं । आप स्वयं निर्गुण, निष्काम, निराकार पारब्रह्म होते हुए भी, जीवोद्धार के लिये शरीर धारण कर प्रगट हुये हैं । अतः मैं आपकी प्राकट्य तिथि को जानना चाहता हूँ । आपने सृष्टि के प्रारम्भ से ही पूनोव्रत की उपासना के लिये बताया है, लेकिन अपनी प्राकट्य तिथि के सम्बन्ध में कुछ नहीं बताया है । हे कृपासिंधु! आपने मुझे कबीर पंथ को चलाने का भार सौंप दिया है, अतः जीवों के कल्याण के लिये, मैं आपसे यह प्रश्न पूछता हूँ । हे स्वामी ! बरसाइत की महिमा के सम्बन्ध में मुझे बतायें, मैं आपका सेवक हूँ ।

इस प्रकार ऐसी प्रार्थना करते हुये धर्मदास जी साहब सद्गुरु के श्री चरणों में लोट गये, तब सद्गुरु कबीर साहब ने उन्हें, अपने हाथों से उठाकर, गले से लगा लिया ।

सतगुरू वचन

धर्मदास तुम संत सुजाना, भल पूछ्यो तुम यह निज ज्ञाना ।
जो बूझो सो सब कहों तुमहीं, तुम तो प्रान प्रिय हो हमहीं ।
निज मुख आप स्तुति ना करहूं, तुम पूछो तो गोय न धरहूं ।
अब भाखों प्रगट तिथि लेखा, धर्मदास चित करो परेखा ।
पूर्व कहेऊं तोहि यह व्यवहारा, त्रेता मुनीन्द्र सुकृत अवतारा ।
बरसाइत तिथि मम अति पावन, कर्म भ्रम भव रोग नशावन ।
पूनो बारह मास मों आवे, ब्रत करे हंसा घर जावे ।
वर्ष दिन में बरसाइत होई, ता दिन ब्रत करे सब कोई ।
ज्ञान विज्ञान कठिन धर्मदासा, सब जीवन की कर्म उपासा ।

सद्गुरु कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास ! तुम सन्तों में श्रेष्ठ, विवेकी सन्त हो। तुमने यह बहुत अच्छा किया, जो ऐसा प्रश्न पूछा है । तुम मेरे प्राण प्रिय शिष्य हो । तुम्हारी जिज्ञासा के समाधान के लिये तुम्हें बताता हूँ । मैं अपने मुख से अपनी प्रशंसा नहीं करना चाहता हूँ, लेकिन जब तुमने प्रश्न किया है, तो मैं अब तुमसे कुछ छिपाना नहीं चाहता हूँ।

हे धर्मदास ! तुम ध्यान देकर सुनो । मैं अपनी प्राकट्य तिथि के सम्बन्ध में बताता हूँ । मैंने इसके पूर्व तुम्हें बताया है कि सतयुग में सत्यसुकृत और त्रेतायुग में मुनीन्द्र के रूप में मेरा अवतरण हुआ है । मेरा प्राकट्य बरसाइत तिथि में हुआ था, यह तिथि अति पवित्र है तथा समस्त असत्य कर्म, मिथ्या मोह-भ्रम का हरण करने वाली, सांसारिक रोगों का

समय चारों दिशाओं में बिजली की चमक और श्वेत भ्रमरों के गुंजन से वातावरण बहुत मनमोहक प्रतीत हो रहा था और साहेब जल के मध्य कमल पुष्प पर विराजमान थे।

चन्दन साहु की नारी, प्रथमें ले गई मोहि ।
साहु त्रास नारी दई, हँसे लोक सब तोहि ॥
तब सो वहां पँवारेउ, जल महँ दीन्ह खसाय ।
देह धरि हम धर्मनि, भक्त हेतु दुख पाय ॥

साहेब के स्वरुप को देखकर, चन्दन साहू की नारी उन्हें उठाकर अपने घर ले गयी। घर ले जाते ही, साहू लोकलाज और बदनामी के डर से नारी को प्रताड़ित करने लगा। तब बेचारी नारी ने भयवश व्यथित होकर, बाल स्वरुप सद्गुरु कबीर को पुनः जल में डुबो दिया। बेचारी अभागिन नारी साहेब के प्रताप को क्या जाने कि साहब ने दुखी भक्तों के उद्धार के लिये शरीर धारण किया है।

तेहि पीछे जोलहा मोहि पावा, धर्मदास तोहि वरनि सुनावा ।
बरसाइत तिथि माने संसारा, तादिन करहि आनन्द अपारा ।
धर्मदास जो तुम्हरी इच्छा, तुमहू करो सन्त महोच्छा ।
चौका आदि यज्ञ पुनि कीजे, मंगल वस्तु सकल पुनि लीजे ।
साधु संत मिलि मंगल गावो, घण्टा शंख वाजिन्त्र बजाओ ।
दोय प्रहर ब्रत पुनि करिए, मम हित लाग प्रेम अनुसरिए ।
संवत् भर के दोष नसाई, प्रति संवत् यह कीजे भाई ।
सकल पाप तब दूर पराई, काया कष्ट सकल मिटि जाई ।
जब सतसुकृत होय समाई, सकल पाप सहजे मिटि जाई ।
यज्ञ पुरूष हम है धर्मदासू, हमरो तिथि यह करो प्रकाशू ।
यद्यपि होय त्रिगुण सो न्यारा, तदपि न छोड़ो यह व्यवहारा ।
धर्मनि तुमसो कहौं विचारा, सकल धर्म पर यह ब्रत सारा ।
श्रुति पुराण यह तिथि को गावे, बट पूजे यहि बात मनावे ।
वृक्ष मांहि बहु प्रेम जनावे, जागृत पीव को भेद न पावे ।
तुम धर्मनि जाग्रत फल लेहू, जाग्रत होय जाग्रत कहँ देहू ।

विनाश करने वाली है। पूर्णिमा व्रत प्रत्येक माह में एक बार, वर्ष भर में बारह बार धारण किया जाता है, इस व्रत को धारण करने से प्राणी अपने निजलोक (सत्यलोक) को जाता है। वर्ष भर में एक बार बरसाइत तिथि आती है। इस दिन सभी प्राणी व्रत रखते हैं। ज्ञान विज्ञान कठिन विषय है, ज्ञान के मर्म को जाने बिना लोग, अनेक प्रकार के कर्मकाण्डों में व्यस्त रहते हैं।

ज्ञान विज्ञान जाने नहिं, दिया कर्म छिटकाय ।
कहैं कबीर सो आतमा, सहजहि नरके जाय ॥

ज्ञान की जानकारी या रहस्य को समझे बिना, जो प्राणी कर्मकाण्ड में लिप्त रहते हैं, सद्गुरु कबीर साहब कहते हैं कि वे प्राणी सीधे नर्क में गिरते हैं अर्थात् नरकलोक को प्राप्त होते हैं।

सुनो धर्मदास ताकर व्यवहारा, जो कोई साधु होय उबारा ।
शब्द सरूपी हमरी देही, नाहिन पांच पचीस सनेही ।
सो प्रगटेउ भक्तन के काजा, ताल मांही हम आनि विराजा ।
सम्वत ग्यारह सौ बीस प्रमाना, जेठ मध्यं बरसाइत जाना ।
बालक को तन तब धर लीन्हा, गण गन्धर्व देखि मोहि चीन्हा ।
कहहीं परस्पर बारम्बारा, साहेब लीन्ह मनुज अवतारा ।
चहुंदिशि दमके दामिनी भारी, श्वेत भ्रमर तहवां गुंजारी ।
साहेब आप विराजे तहवां, जल सय्या पुरइन पर जहवां ।

हे धर्मदास ! तुम इस रहस्य को भली-भाँति समझ लो, जिससे सभी सहृदय साधु, सज्जनों का उद्धार होता है। सद्गुरु कबीर साहब कहते हैं कि मेरा शरीर शब्द स्वरुपी है, जो पाँच तत्वों और उनकी पच्चीस प्रकृतियों के द्वारा निर्मित नहीं है। केवल भक्तों के उद्धार के लिये ही शरीर धारण कर, लहरतारा तालाब में, कमल पुष्प पर मैं प्रगट हुआ हूँ। सम्वत् ११२० में ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या बरसाइत के दिन बाल स्वरुप में सद्गुरु कबीर साहब जीवोद्धार के निमित्त प्रगट हुये थे।

साहेब के स्वरुप को देखकर, वहाँ पर उपस्थित ऋषि, मुनि, गन्धर्वगण आपस में बार-बार यही कहने लगे कि सत्यपुरुष स्वयं मनुज शरीर धारण कर अवतरित हुये हैं। उस

बट वृक्ष की पूजा करते हैं और प्रत्यक्ष पूर्ण सद्गुरु को भूल जाते हैं। हे धर्मदास ! तुम जड़ पूजा की जगह प्रत्यक्ष, साकार सद्गुरु से आशीर्वाद लो और अपनी चेतना को जाग्रत करके, दूसरे प्राणियों की चेतना को जगाओ। समस्त स्त्रियाँ वट वृक्ष की पूजा करके अपनी मनोकामना पूर्ण करने की प्रार्थना करती है। अज्ञानी लोग बिना रहस्य को जाने, परम्परागत ढंग से वट वृक्ष की पूजा में लिप्त रहते हैं।

हे धर्मदास ! तुम्हारे द्वारा पूछने पर मैं पूर्ण कथा तुम्हें बताता हूँ। सत्यलोक के ज्ञानी जी, सत्यपुरुष के आदेशानुसार सद्गुरु कबीर साहब के रूप में कलियुग में प्रगट हुये। नीमा-नीरु ने उनका दर्शन प्राप्त किया। पारब्रह्म सत्यपुरुष बरसाइत के पावन अवसर पर प्रगट हुए। अतः इस तिथि के समान अन्य कोई तिथि नहीं है।

ज्ञानी पुरुष सद्गुरु कबीर साहब धर्मदास जी से कहते हैं कि हे धर्मदास ! तुम्हारे द्वारा पूछने पर मैं अपने इस परमगुप्त रहस्य को आज बता रहा हूँ। इसे तुम सभी हंस जीवों को भी बताओ। हंस जीव वही है, जो मेरे लिये, बरसाइत तिथि के पावन अवसर पर प्रेम पूर्वक व्रत धारण करता है।

धर्मदास बचन

हे प्रभु ! आशीष दीजे मोही, बरसाइत हित बन्दौं तोही ।
करो महोत्सव बहुत प्रकारा, कबीर नाम पर सरबस वारा ।
जो विधि हो सो तैसेहि भाखों, जाते जीव अमर घर राखों ।
मैं तो पुरूष आपको जानों, मन बच कर्म तुमहि पहिचानों ।

धनी धर्मदास जी साहब, कबीर साहेब से आशीर्वाद माँगते हुये, उनकी वन्दना करते हुए कहते हैं कि हे स्वामी ! मैंने आपके नाम 'कबीर' पर अपना तन, मन, धन सर्वस्व अर्पित कर दिया है। मैं बरसाइत तिथि पर अनेक प्रकार से महोत्सव का आयोजन करुँगा। जीव अमरलोक में जिस प्रकार जाता है, उस विधि का वर्णन करने की कृपा करें।

मैं तो आपको ही पारब्रह्म सत्यपुरुष मानता हूँ, क्योंकि मैंने मनसा, वाचा, कर्मणा आपको भली-भाँति पहचान लिया है।

बट पूजे सकलो त्रिय जाई, करे मनोरथ मन चित लाई ।
ये ही विधि सो करे संसारा, भेद न जाने मूढ गंवारा ।
धर्मदास जो पूछेव मोसो, सो सब कथा कह्यौ मैं तोसो ।
महापुरूष यह बचन उचारा, ज्ञानी कलियुग प्रगट संसारा ।
नीमा नीरू दरशन पाई, सो तिथि महातम कहो समुझाई ।
बरसाइत सम तिथि नहि आना, पार ब्रह्म अवतार अमाना ।
सो ज्ञानी धर्मनि कहँ देहू, सकल हंस आपन कर लेहू ।
सो धर्मनि हम हृदये राखा, बिन पूछे नहिं तुमसे भाखा ।
जो कोई प्रेम सहित ब्रत ठाने,मम हित लाग बरसाइत माने ।

इसके पश्चात् सम्वत् १४५५ में जब साहब पुनः प्रगट हुये, तो जुलाहे नीरु नीमा उन्हें अपने घर ले गये थे। हे धर्मदास ! इसके सम्बन्धमें तुम्हें मैं विस्तृत रुप से बता चुका हूँ। बरसाइत तिथि को, संसार में लोग बड़े उत्साह व आनन्द के साथ मनाते हैं। हे धर्मदास! तुम भी साधु सन्तों के साथ महोत्सव के रुप में, व्रत धारण करो। सात्विक यज्ञ चौका आरती करो, मंगलकारी सभी वस्तुओं को एकत्रित कर, साधु सन्तों के साथ मिलकर घण्टा, शंख आदि वाद्य यंत्रों को बजाते हुये, सद्गुरु साहब गुणगान करो। दोपहर तक सद्गुरु कबीर साहब का स्मरण करते हुये पूरी निष्ठा के साथ व्रत धारण करो।

वर्ष भर में एक बार आने वाली बरसाइत के अवसर पर, व्रत धारण करने से, प्राणियों के द्वारा पूरे वर्ष में किये गये समस्त दोष, पाप नष्ट हो जाते हैं। अतः प्रत्येक वर्ष इस व्रत को धारण करना चाहिये। सत्यसुकृत सद्गुरु कबीर साहब की अपार दया से, प्राणियों के समस्त पाप सहजता के साथ मिट जाते हैं। शारीरिक कष्ट, रोग आदि दूर हो जाते हैं।

सद्गुरु कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास ! मैं यज्ञ पुरुष हूँ, मेरी पावन तिथि का पूरे संसार में प्रचार करो। मैं विचारपूर्वक कहता हूँ कि यह तीनों गुणों से न्यारा व्रत है, समस्त धर्मों का सार है, सभी श्रुतियाँ (वेद) और पुराण इस पावन तिथि की महिमा का वर्णन करते हैं और पूरे संसार में वट-वृक्ष की पूजा की जाती है।

बरसाइत तिथि के रहस्य को न जानने के कारण, लोग चैतन्य सद्गुरु के स्थान पर

सद्गुरु कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास ! तुम साधु सन्तों को आमंत्रित करके, बरसाइत तिथि पर महोत्सव का आयोजन करो। यह व्रत धर्म-साधनाओं का सार है, क्योंकि इसी दिन निर्गुण निराकार ब्रह्म, सत्यपुरुष स्वयं मानव शरीर धारण कर प्रकट हुये हैं। लोग अड़सठ (६८) तीर्थों और पूरी पृथ्वी की परिक्रमा करते हैं, भगवान विष्णु के राम, कृष्ण आदि दसों अवतारों की भक्ति वेद, पुराण, शास्त्रानुसार करते हैं, ऋषि, मुनि, गन्धर्व, नाग, किन्नर आदि अन्य अनेक प्रकार के व्रत, कर्मकाण्ड करते हैं। मैंने सभी व्रतों को छोड़कर केवल एक व्रत, पूर्ण समर्थ सत्यपुरुष का व्रत धारण किया है।

हे धर्मदास ! तुम्हें अपना परम प्रिय शिष्य मानकर, मैं तुम्हें भी इसी व्रत को पालन करने के लिये कहता हूँ। सभी प्रकार की धर्म-साधना का फल केवल एक बरसाइत व्रत धारण करने पर मिल जाता है। तुम्हारी प्रबल जिज्ञासा को देखकर, हे धर्मदास ! मैं तुम्हें इस परम उपासना व्रत को रखने के लिये कहता हूँ। जो कोई भी सत्यधर्म कबीरपंथी संत महात्मा, सेवक, सती आदि अधिकारी जीव है तथा वंशगद्दी से सम्बन्धित है तथा पूज्य वंशाचार्य, जिनके ऊपर जीवों के उद्धार का भार है, इस परम पावन व्रत को धारण करने से नहीं चूकते हैं।

हे धर्मदास ! मैं अपने सभी वंशों को चेतावनी के साथ, इस सत्य को बार-बार दोहराते हुये कहता हूँ कि बरसाइत व्रत समस्त व्रतों में सर्वश्रेष्ठ , सर्व शिरोमणि है, यह व्रत आदि काल से ही सद्गुरु साहब के प्राकट्य की अनुपम जन्मतिथि के रुप में प्रसिद्ध है। इस व्रत को परम अनुराग के साथ, निष्ठापूर्वक धारण करने से मन पवित्र एवं आनन्दमग्न हो जाता है।

बरसाइत तिथि के आने पर, सर्वप्रथम घर की सफाई करके, तन-मन को शुद्ध बनाकर, श्रद्धापूर्वक व्रत धारण करके, सद्गुरु कबीर साहब का ध्यान करना चाहिये। जो मेरी भक्ति में लीन अधिकारी जीव हैं, उनके द्वारा भूल-चूकवश हुये करोड़ों पाप जलकर नष्ट हो जाते हैं। जैसे सूर्य के उदय होने पर अंधेरा नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार सद्गुरु की अमृत कथा के श्रवण से, भक्तों के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। दृढ़ निश्चय के साथ जो प्राणी व्रत धारण करता है, उसे करोड़ों अश्वमेध यज्ञों का फल प्राप्त होता है।

बरसाइत व्रत के दिन संयम नियमपूर्वक आचरण करना चाहिये । खान पान में संयम बरतना चाहिये और सद्गुरु साहब के प्रति हृदय में पूर्ण अनुराग रखना चाहिये। मन

सतगुरू बचन

कहैं कबीर सुनहु धर्मदासू, करो महोत्सव संत नेवासू ।
सकल उपासन को मत सारा, निर्गुण ब्रह्म प्रगट तन धारा ।
अड़सठ तीर्थ पृथ्वी पैकर्मा, जन्म अष्टमी आदि ब्रत धर्मा ।
और कर्म जेते व्यवहारा, रामकृष्णादि दसों अवतारा ।
वेद पुराण जहाँ तहाँ गावे, दस अवतार की भक्ति दृढ़ावे ।
कर्म काण्ड अनेक प्रकारा, ऋषि मुनि नाग किन्नर व्यवहारा ।
हम सब छांड़ एक ब्रत कीन्हा, सो धर्मनि तुम निजकर चीन्हा ।
सकल पदारथ जो फल पावे, सोई फल इक बरसाइत आवे ।
तुम्हरी तृषा देख धर्मदासू, परम उपासन तुमसो भासू ।
जो कोई कबीर नाम ब्रतधारी, तिनसो आहि वंश अधिकारी ।
जिनको सब जीवन को भारा, सो नहिं चूके यह ब्रत सारा ।
धर्मनि कहों सत्य गोहराई, आपन बंश ही कहों चिताई ।
प्रगट जन्म तिथि आदि अनूपा, सकल ब्रत को है वह भूपा ।
बहुत प्रीति सो कीजे याही, अति आनन्द होय मन मांही ।
जब बरसाईत आवे भाई, प्रथमे लो सब शुद्ध कराई ।
जाकी श्रद्धा जौन विधि होई, सो तस करे न संशय कोई ।
जो मम भक्त होय अधिकारा, कोटि पाप होवे जरि छारा ।
ज्यों रवि उगे तिमिर नसाता, त्यों मम भक्ति अघजात निपाता ।
पातक जितने लागे अंगा, सुनतहि सकल होय ते भंगा ।
इच्छा हृदय निश्चय होय सोई, कोटिन अश्वमेध का फल होई ।
नेम प्रीति सो ता दिन रहिये, खान पान संयम सो गहिये ।
पत्नी युक्त कर्म जो करिए, मनहिं विकार सकल परिहरिए ।
अन्तःकरण विकार न जौलौ, मम हित लाग करहि ब्रत तौलौ ।

धर्मनि तुमसो कहों प्रमाना, सत्यबचन यह निश्चय माना ।
जिनको मम बचन की आशा, सो जन निश्चय गहे विश्वासा ।
तुम हित धर्मनि कहो बुझाई, सकल धर्म का सार बताई ।

हे धर्मदास ! सभी हंस जीवों का जिस विधि से कल्याण हो, वह सब मैंने तुम्हें सूक्ष्म रुप में बता दिया है। यद्यपि सभी विधियों को सम्पन्न करने में धन की आवश्यकता होती है, परन्तु प्रेम भावना से बढ़कर उत्तम कोई विधि नहीं है। हे धर्मदास ! सत्यसुकृत सत्यपुरुष की भक्ति में जो प्राणी रत रहते हैं, उनकी सहायता स्वयं सद्गुरु करते हैं। चौरासी लाख योनियों में सबसे दुर्लभ मानव शरीर की प्राप्ति है। सभी मनुष्यों में, जिस प्राणी की चेतना जग जाती है, वह सद्गुरु की भक्ति को छोड़कर, सांसारिक विषय-विकारों में लिप्त नहीं होता है।

वर्ष भर में मानव अनेक प्रकार के कर्मकाण्डों में लिप्त रहता है। पूर्वजों के उद्धार के लिये पितृपूजन आदि अनेक कर्म मनुष्य करता है, पूरे परिवार को आमंत्रित करके भोजन खिलाता है। परन्तु सत्यपुरुष की भक्ति, शुभ कर्म, पवित्र आचरण न करने से जीव भ्रम में पड़कर भटकता फिरता है। हे धर्मदास ! तुम मेरी बात को निश्चयपूर्वक हृदय में धारण कर लो। मेरे सत्यवचन को प्रामाणिक रुप से जान लो कि जो जीव बरसाइत व्रत को, मेरा स्मरण करते हुए, धारण करता है, वह मेरा कृपापात्र बन जाता है। जिस प्राणी को मेरे वचनों पर पूर्ण विश्वास है, वह निश्चित रूप से इस व्रत को धारण करेगा। हे धर्मदास ! मैंने तुम्हें सभी धर्मों का सार, निष्कर्ष बता दिया है।

छन्द

सतपुरूष को कहे वाको सत सुकृत जानि हो ।
राजा चोर और तेज पावक करि सके नहिं हानि हो ।
सत्य हीन मलीन दिन दिन दुखित यह संसार हो ।
नर पातकी तन भोग सो गहि नर्क बार ही बार हो ॥१॥
कबहु के कुछ पुण्य पूर्व के ताते बड़ाई पावही ।
वह करत है अपकर्म दिन दिन मीन मदिरा खावही ।
कछु गनत कर्म अकर्म नाहीं अपने मन मति अन्ध हो ।

के सभी विकारों को त्यागकर, स्त्री पुरुष को शुद्ध पवित्र आचरण, सात्विक कर्म करना चाहिये। मेरे भक्त को, सभी विकारों को त्यागकर, शुद्ध अन्तःकरण से व्रत धारण करना चाहिये।

तन मन धन अर्पण करे, सन्तन मन उत्साह ।
जो चाहे सोई करे, प्रभु के हाथ निबाह ॥
गहो बांह जीव तुम्हरे, साहेब तुम मोहि मांह ।
जो चाहो सोई करे, सतगुरू के हाथ निबाह ॥
प्रभु की नाव भक्ति है, जो चाहे सो तरि जाय ।
मन बच कर्म हृदया धरे, सतगुरू होहि सहाय ॥

सभी संत, सेवकों को अपना तन, मन, धन सद्गुरु साहब के चरणों में अर्पित करते हुये, अपने को पूर्णतया उनकी इच्छा पर छोड़ देना चाहिये।

सद्गुरु साहब से यही निवेदन करना चाहिये कि हे सद्गुरु ! तुम सदैव मेरे हृदय में विराजमान रहो। मैं अब पूरी तरह तुम्हारी शरण में हूँ, अब तुम जो चाहे, सो करो। मेरी बाँह पकड़कर मेरा उद्धार करो।

इस संसार में सद्गुरु की भक्ति रुपी नौका पर आरुढ़ होकर, जो भी प्राणी चाहे, भवसागर से पार उतर सकता है। मनसा, वाचा, कर्मणा पूरी निष्ठा के साथ जो प्राणी सद्गुरु की भक्ति करता है, उसका सद्गुरु की कृपादृष्टि से उद्धार हो जाता है।

धर्मनि सूक्ष्म तुमसो कहेऊं, जाते सकल हंस निरबहेऊं ।
सकल विधि यह धन ते होई, नहि तो भाव सम नहिं कोई ।
सत सुकृत की भक्ति विलासा, सतगुरू सहाय होहिं धर्मदासा ।
लख चौरासी योनिन गनि लेही, सबसो दुर्लभ नर तन देही ।
तेही महं चेतन नर होई, विषयन संग बहे मत कोई ।
संवत् महं अनेक कर्म करई, पितृ आदि बहुत भर्म परई ।
पै शुभ कर्म करे नहिं कोई, कर्म वश सब गए बिगोई ।
कुटुम्ब आदि सब नेवत जीवावे, यहि विधि सकल जीव ङ्हकावे ।
मम हित लाग जो यह विधि करहीं, बरसाइत हृदया चित धरहीं ।

जो सद्गुरु की शिक्षा को सुनकर जाग जाते हैं, वे प्राणी परम सम्पदा मुक्ति को प्राप्त कर लेते हैं। जो नहीं सुनते वे अचेत प्राणी मुक्ति रुपी परमधन को खो देते हैं। जो जीव जाग जाता है, वह सत्यलोक में अमर पद प्राप्त करता है। जो नींद में सोया अचेत अज्ञानी है, वह मरकर प्रेत योनि धारण करता है, बार-बार यमराज के डंडे खाने के बाद भी वह अचेत बना रहता है। वेद शास्त्र पुराण भी कहते-कहते थक गये, लेकिन ऐसा मूर्ख अज्ञानी जीव बार-बार मनमुखी कर्म करने से बाज नहीं आता है।

कलियुग में अनेक प्राणी विषय-वासना भोग विलास में मदमस्त होकर अज्ञानावस्था को प्राप्त करते हैं, ऐसा कलियुग का प्रभाव है। हे धर्मदास ! कलियुग में प्राणियों की योग यज्ञ, जप तप, दान आदि देने की शक्ति क्षीण हो जाती है, अतः केवल नाम स्मरण का ही सहारा शेष रहता है। अत हे धर्मदास ! तुम सतगुरु के सत्यनाम का सहारा लेकर, सद्गुरु की भक्ति निष्ठापूर्वक धारण करो।

सोरठा

तुम पूछेव धर्मदास, लीला मम उत्पत्ति की ।
राधे जो कोय दास, तेहि निकट कबीर हो ।
बरसाइत जब होय, ता दिन यहि विधि करे ।
पुत्र कलत्र बहु सोय, तेहि समेत माने मोही हो ।

हे धर्मदास ! तुमने मेरे प्राकट्य के सम्बन्ध में जानना चाहा है, तो जो प्राणी मेरी प्राकट्य तिथि बरसाइत के दिन व्रत धारण करता है, मेरी आराधना करता है, वही मेरा परमप्रिय सद्शिष्य है। मेरा स्मरण करते हुये, बरसाइत व्रत को पुत्र, कलत्र (पत्नी) आदि समस्त परिवार के साथ, जो प्राणी निष्ठापूर्वक धारण करता है, वह उभय लोक, लौकिक व पारलौकिक दोनों का सुख और आनन्द प्राप्त करता है।

॥ इति श्री ग्रन्थ बरसाइत महात्मय सत्य कबीर धर्मदास संवादो
मुक्ति उपदेश जन्मतिथि वर्णन समाप्त ॥
॥ सत्य कबीराय नमः ॥

●●

तिन्ह तनिक सुख कोटि मानत पचत पामर धन्ध हो ॥२॥
रहत फूले विषय भूले चित्त ले चाव हो ।
चपल चातुर काम आतुर रसिक आप कहाव हो ।
कहत जानत सुनत शठ सो निलज ऐसे आप हो ।
पुनि पुनि होत विमुख हम सो प्रबल घेरे पाप हो ॥३॥
यह होत उतपत प्रबल पुनि पुनि रैन दिन ज्यौं होय हो ।
जागन हार सो माल राखे सोय डारे खोय हो ।
एक हंस होय लोक पहुंचे, एक भये मरि-मरि प्रेत हो ।
पुनि जम के धक्का अनेक खाहीं, तबहुं नहिं चित चेत हो ॥४॥
करत मन मति कर्म सबही कहि थके वेद पुरान हो ।
कलिकाल होई है अमित छकि-छकि मदन सूरान हो ।
जप यज्ञ नाना ब्रत तपस्या नहिं दान की शक्ति हो ।
अवलम्ब केवल नाम धर्मनि ! करहु निज मम भक्ति हो ॥५॥

जो सत्यपुरुष का गुणगान करे, वही सत्कर्मी धर्मात्मा प्राणी है। शासक, चोर, तीव्र अग्नि भी उसे कोई हानि नहीं पहुँचा सकती है। यह संसार सत्यमणि को छोड़कर दिन प्रतिदिन मलीन, दुखी हो रहा है। असत्य, मिथ्या को ग्रहण करने से मनुष्य पतित होकर, बार-बार गर्भवास के नर्क को भोग रहा है। पूर्व जन्म के शुभ कर्मों के पुण्य से, कभी-कभी वह यश का भागी बनता है, सत्यमार्ग पर चलने का प्रयत्न करता है।

परन्तु काल माया के जाल में पुनः उलझकर, वह पाप की ओर अग्रसर हो जाता है। दिन प्रतिदिन माँस-मदिरा का सेवन करता है। मनमुखी होकर, सत्य-असत्य का विचार नहीं करता है। अन्धे की तरह अधर्म के मार्ग पर बढ़ता चला जाता है। सांसारिक विषयों से प्राप्त अल्प सुख को स्थायी मानकर नीच, पतित हो जाता है। सांसारिक प्रपंचों, विषय विकारों में फँसकर, वह अति चंचल, कामातुर होकर बुरे कार्यों में सदैव लिप्त रहता है। ऐसा बुद्धिहीन निर्लज्ज प्राणी घोर पापी तथा पतित हो जाता है, किसी के समझाने पर भी सद्गुरु के सत्यमार्ग की ओर उन्मुख नहीं होता है। जैसे रात और दिन बारी-बारी से होते रहते हैं, उसी प्रकार वह जीव बार-बार जन्म मरण के चक्र में बुरी तरह फँस जाता है।